

# मानसिक मंदन



निर्देशन परामर्शकों  
के लिए निर्देश  
पुस्तिका



राष्ट्रीय मानसिक विकलांग संस्थान  
मनोविकास नगर,  
सिकन्दराबाद - 500 009

# मानसिक मंदन

## निर्देशन परामर्शकों के लिए निर्देश पुस्तिका

व्यावसायिक निर्देशन काउंसलर, सामाजिक कार्यकर्ता, विशेष रोजगार कार्यालय के अधिकारीगण, व्यावसायिक प्रशिक्षक और मंदबुद्धि व्यक्तियों के नियोजक भी इस पुस्तक का लाभ उठा सकते हैं ।



राष्ट्रीय मानसिक विकलांग संस्थान

(सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय, भारत सरकार)

मनोविकास नगर, सिकन्दराबाद - 500 009.

फोन : 040-775 1741-45 फैक्स : 040-7750 198

**मानसिक मन्दन**  
निर्देशन परामर्शकों के लिए निर्देश पुस्तिका

**योगदान**

टी. माधवन

मंजुला कल्याण

जयन्ती नारायण

रीता पेशावरिया

**नोट**

शिक्षण, प्रशिक्षण व अनुसंधान के लिए इस प्रकाशन को पूरा या किसी भी भाग पुनः निर्मित कर सकते हैं। तथा हिन्दी व अन्य किसी क्षेत्रीय भाषा में भी अनुवाद कर सकते हैं और इसके लिए एन.आई.एम.एच. से लिखित पूर्वक अनुमति लेना जरूरी है।

कॉपीराइट (सी) 1988  
राष्ट्रीय मानसिक विकलांग संस्थान  
सिकन्दराबाद - 500 009

सर्वाधिकार सुरक्षित  
चित्रकार : के. नागेश्वर राव

**ISBN 81-86594-04-3**

युनिसेफ की वित्तीय सहायता से 1988 में पहला प्रकाशित अंक  
दुबारा मुद्रित 1994 (एन.आई.एम.एच.)  
दुबारा मुद्रित 1996 (एन.आई.एम.एच.)

मुद्रक : जि.ए. ग्राफिक्स, हैदराबाद © 040-756 4061

# विषय वस्तु

	पृ.सं.	
प्रस्तावना	i	
आमुख	ii	
पुस्तिका के बारे में	iii	
आभार	iv	
पहला अध्याय —	परिभाषा एवं वर्गीकरण	1
	परिभाषा	3
	वर्गीकरण	4
	विशेषताएं	6
	व्यापकता	7
	सारांश	9
	स्व-मूल्यांकन - 1	9
दूसरा अध्याय —	कारण एवं रोकथाम	11
	कारण	13
	रोकथाम	15
	सम्बद्ध समस्याएं	17
	बहुविकलांगता	19
	सारांश	21
	स्व-मूल्यांकन - 2	21
तीसरा अध्याय —	पहचान एवं परामर्श	25
	बाल विकास	27
	पहचान	33
	जांच परख अनुसूचियां	34

	परामर्श	37
	सारांश	38
	स्व-मूल्यांकन - 3	39
चौथा अध्याय —	प्रबंधन	41
	अभिभावक परामर्श	43
	अभिभावकों द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्न	46
	सामाजिक जागरूकता	47
	सारांश	50
	स्व-मूल्यांकन - 4	51
पाचवा अध्याय —	व्यावसायिक प्रशिक्षक तथा नौकरी विस्थापन	53
	व्यावसायिक परिवेश के प्रकार	57
	उपयुक्त व्यवसायों की सूची	58
	व्यवसायपूर्व स्तर के लिए जांचसूची	61
	सारांश	67
	स्व-मूल्यांकन - 5	68
उत्तर कुंजी —		69

## प्रस्तावना

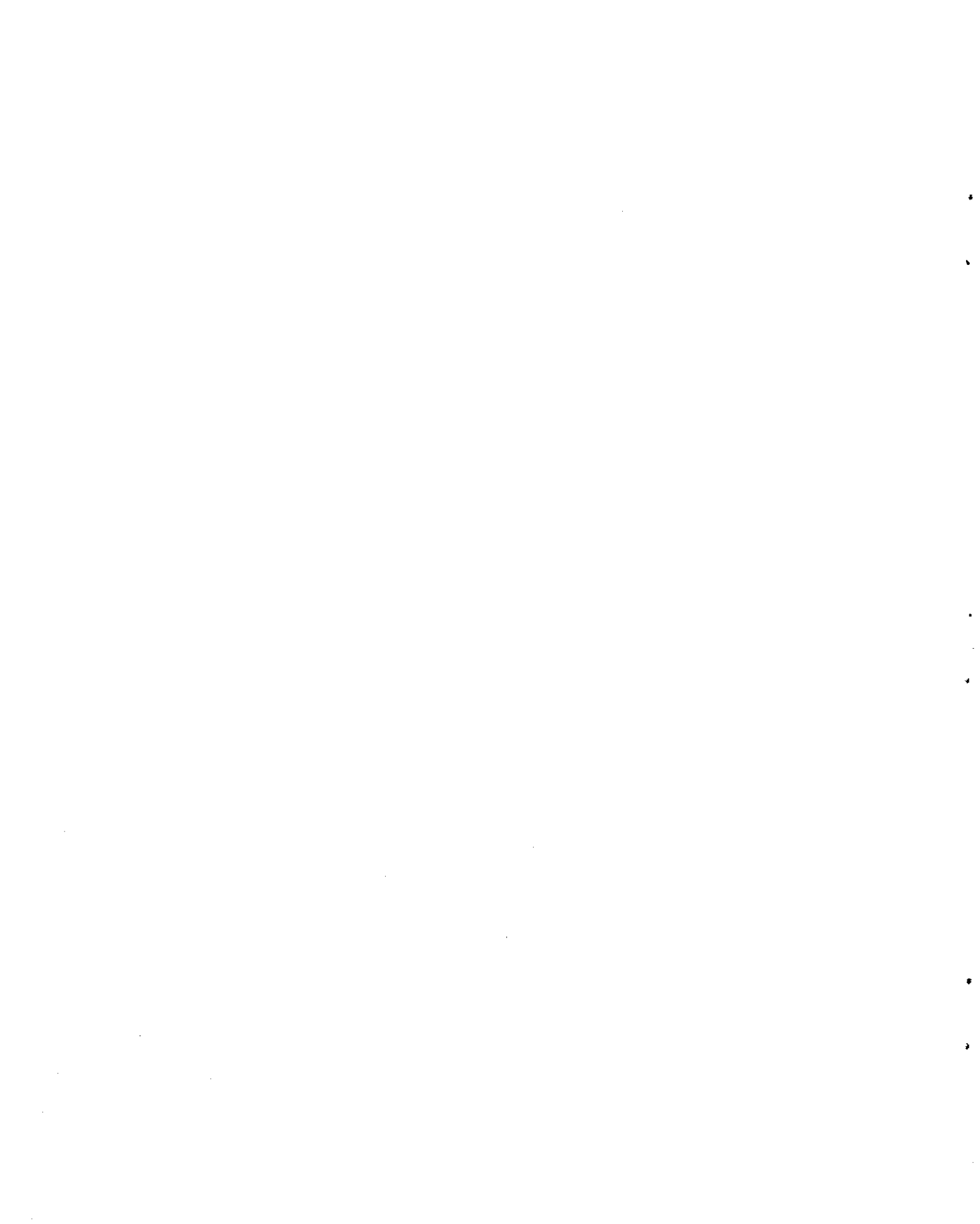
यह पुस्तिका विशेष तौर पर जिला पुनः स्थापन केन्द्र योजना के व्यावसायिक निर्देशन परामर्शको के प्रयोग के लिए तैयार की गई है। यह पुस्तिका ग्रामीण परिवेश में जिला पुनर्वास केंद्र योजना के परामर्शको की अति विशिष्ट आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रीय मानसिक विकलांग संस्थान, सिकन्दराबाद के उन व्यक्तियों द्वारा लिखी गई है जो इस काम से जुड़े हुए हैं। यूनिसेफ इसके प्रायोजक हैं। इस पुस्तिका का उद्देश्य मानसिक रूप से मंद व्यक्तियों के प्रति समाज में जागरूकता पैदा करना, अमिभावकों को परामर्श देना, मंद मानसिक रूप से बच्चों की पहचान के लिए जांच (स्क्रीनिंग) करना, उनके लिए व्यावसायिक निर्देशन और व्यवसाय के अवसरों की खोज करना है। इस पुस्तिका में पाठकों के लिए स्वमूल्यांकन की ऐसी व्यवस्था भी है जिससे वे यह जान सकते हैं कि, उन्हें इस संबंध में कितनी जानकारी है।

मानसिक रूप से मंद व्यक्तियों के लिए पुनः स्थापन कार्यक्रमों को लेकर, विशेषकर रोजगार में उनकी सहायक भूमिका के सम्बन्ध में, दो दशकों से भी अधिक समय से गंभीर रूप से चिंतित हम जैसे लोगों के लिए यह प्रसन्नता की बात है कि, इस अवधि के दौरान इन लोगों की अवस्था में इनके हित में आश्चर्यजनक परिवर्तन हुए हैं। तीन दशक पहले विशेष सेवाएं प्रदान करने वाली संस्थाओं की संख्या 10 थी। जो आज बढ़कर तीन सौ से अधिक हो गई है यह निश्चित रूप से प्रगति तो है। किंतु दुःख इस बात का है कि, प्रगति की यह दर अत्यंत धीमी है। इस वास्तविकता को देखते हुए कि, हमारे देश की लगभग 80% जनता ग्रामों में बसती है जिसमें से 50% से भी अधिक लोग सुदूर क्षेत्रों में रहते हैं, व्यापक और प्रभावी सेवाएं प्रदान करना उन बड़ी चुनौतियों में से एक है जिसका सामना हमें आने वाले कई वर्षों तक करते रहना होगा। इस पुस्तिका का उद्देश्य जिला पुनर्वास केंद्र के कार्यकर्ताओं को इस चुनौती का प्रभावी ढंग से सामना करने में सहायता देना है। इसमें कोई संदेह नहीं कि, यह पुस्तक अपने उद्देश्य में पूर्णतः सफल होगी।

चूंकि, यह मनोवैज्ञानिकों के लिए मानसिक मंदन विषय पर निर्देशन पुस्तक की सहायक पुस्तक है अतः मुझे विश्वास है कि, यह सुगठित कार्य उन लोगों को पर्याप्त सहायता देगा जिन्हें मानसिक रूप से मंद व्यक्तियों के संदेश का समाज में केवल प्रसार ही नहीं करना है बल्कि, यह भी सुनिश्चित करना है कि, सब उसे सुनें और स्वीकार भी करें।

नवज्योति ट्रस्ट  
मद्रास एवं बेंगलूर

— डी.जे.के. कार्नेलियस  
मानसेवी निर्देशक



## आमुख

व्यावसायिक प्रशिक्षण के लिए यह आवश्यक है कि वह रोजगार के अवसरों, बाजार की अपेक्षाओं और समाज में प्रवृत्त सामाजिक-आर्थिक स्थितियों से सामंजस्य बनाए रखे। परम्परागत व्यावसायिक प्रशिक्षण जिनमें मोमबत्ती बनाना, वॉक बनाना, चटाई बुनना, टोकरी बनना, लिफाफे बनाना आदि जैसे व्यवसायों पर बल दिया जाता है, मानसिक रूप से विकलांग लोगों को रोजगार दिलाने के लिए तैयार नहीं कर सकते हैं। मानसिक रूप से विकलांग किसी वयस्क व्यक्ति को स्वावलम्बी बनाने की दिशा में प्रोत्साहित करने के लिए यह आवश्यक है कि उसे या तो उसके निवास स्थान के नजदीक ही कोई नौकरी मिल जाए या फिर ऐसे स्थान पर नौकरी मिले जहां पर वह स्थानीय परिवहन सेवाओं का लाभ उठाते हुए आसानी से आ-जा सके। हमारे अपने ही देश में किए गए प्रयोगों से यह बात स्पष्ट रूप से सामने आई है कि, मध्यम या गंभीर रूप से मानसिक रूप से मंद व्यक्तियों को आश्रयी कार्यशाला स्थितियों, स्व-रोजगार और खुली स्पर्धा के रोजगार में रोजगार दिलाकर धनोपार्जन के योग्य बनाया जा सकता है। यह जरूरी है कि, प्रशिक्षण में उन्ही पहलुओं पर विशेष बल दिया जाए जो रोजगार के लिए प्रत्यक्ष रूप से अपेक्षित हैं। मानसिक रूप से विकलांग व्यक्ति रोजगार कर सके इस के लिए यह अपेक्षित है कि, उन्हें किसी प्रकार की सहायता मिले। यह देखकर और भी प्रसन्नता होती है कि ये सुविधाएं पाकर मानसिक रूप से मंद व्यक्ति भी किसी से कम नहीं रहता।

प्रशिक्षण द्वारा वे पेचकस को ज्यादा तेजी से इस्तेमाल कर सकते हैं, नट जल्दी से कस सकते हैं और अपना काम अधिक कुशलता से कर सकते हैं।

ग्रामीण क्षेत्रों में ऐसे कई मानसिक रूप से मंद व्यक्ति हैं जो पहले ही सुनियोजित एवं पुनः स्थापित हैं। शायद यह उपयुक्त होगा कि, उन घटकों का पता लगाया जाए जो ऐसे व्यक्तियों के पुनः स्थापन में सहायक होते हैं ताकि, गंभीर रूप से मानसिक रूप से मंद व्यक्तियों को भी काम करने के इसी प्रकार के अवसर और पुनः स्थापन के लिए इसी प्रकार का प्रशिक्षण दिया जा सके। यह अच्छा होगा यदि गांवों में रहने वाले मानसिक रूप से मंद व्यक्तियों को उनके अपने ही गांव में स्व-रोजगार के रूप में कोई कार्य मिल जाए। मानसिक रूप से विकलांग व्यक्तियों के साथ काम करने वाले व्यक्तियों के लिए यह एक चुनौती है कि, वे उनके लिए ऐसे उपयुक्त व्यवसाय की खोज करें जिसे अपने नैसर्गिक परिवेश में पूरा कर सकें।

दिसम्बर, 1988

— (डॉ. डी. के. मेनन)

निदेशक, रा.मा.वि. संस्थान



## निर्देशन पुस्तिका

यह पुस्तिका जिला पुनः स्थापन केन्द्र योजना के व्यावसायिक मार्गदर्शक परामर्शकों के मदत के लिए लिखी गई है। यह उन चार पुस्तकों की श्रृंखला में से एक है जिनका आशय बच्चों में मानसिक मन्दन की प्रारम्भिक अवस्था की पहचान करने और उनके प्रबन्धन के लिए ग्रामीण क्षेत्रों में कार्यरत लोगों का मार्गदर्शन करना है। मानसिक मन्दन के लिए कार्य करने वाले अन्य लोगों जैसे सामाजिक कार्यकर्ताओं, व्यावसायिक प्रशिक्षकों, विशेष रोजगार कार्यालयों के अधिकारियों और ऐसे अन्य लोगों के लिए भी यह पुस्तिका उपयोगी सिद्ध होगी क्योंकि, इसमें मानसिक मन्दन से सम्बन्धित सामान्य जानकारी दी गई है। इस पुस्तिका में पांच अध्याय हैं जिसमें परिभाषा और वर्गीकरण, कारण एवं रोकथाम, पहचान एवं परामर्श, प्रबन्धन एवं व्यावसायिक प्रशिक्षण और नौकरी विस्थापन सम्बन्धी जानकारी दी गई है।

जिला पुनः स्थापन केन्द्रों में व्यावसायिक मार्गदर्शक परामर्शकों को ध्यान में रखते हुए इसमें दिए गए अध्यायों में सामाजिक जागरूकता, अभिभावकों को परामर्श, व्यावसायिक प्रशिक्षण और नौकरी विस्थापन विषयों को शामिल किया गया है। अंतिम अध्याय में ऐसे विभिन्न व्यवसायों ब्यौरा दिया गया है जो मानसिक रूप से मंद व्यक्ति कर सकते हैं और व्यवसाय से पहले किए जाने वाले निर्धारण के लिए एक जांचसूची भी दी गई है जिस पर इस समय एन.आई.एम.एच. द्वारा क्षेत्र परीक्षण किया जा रहा है।

यह पुस्तिका "मानसिक मन्दन मनोवैज्ञानिकों के लिए एक पुस्तिकों की पूरक पुस्तिका है। इन दोनों पुस्तिकाओं में पहले तीन अध्याय एक जैसे हैं। मार्गदर्शक परामर्शकों को चाहिए कि, मनोवैज्ञानिक निर्धारण, कौशल प्रशिक्षण और व्यवहार प्रबन्धन के ब्यौरों के लिए वह मनोवैज्ञानिकों के लिए तैयार की गई पुस्तिका देखें। इस पुस्तिका को पढ़ने के बाद मार्गदर्शक परामर्शक मानसिक रूप से मंदबुद्धि बच्चों की पहचान करने की, स्थिति में होगा और उनके प्रबन्धन के सम्बन्ध में उनके अभिभावक उचित निर्देशन दे सकेगा। वह मानसिक रूप से मंद व्यक्तियों के लिए ग्रामीण क्षेत्रों में उपयुक्त व्यवसायों का चयन करने में भी सक्षम होगा। इस पुस्तक के प्रत्येक अध्याय के आरंभ में अनुदेशात्मक उद्देश्य और अंत में स्व-मूल्यांकन प्रनावली दी गई है। यह आशा की जाती है कि, पाठकों के लिए यह पुस्तिका समाज में मंद मानसिक रूप से व्याक्तियों के निर्देशन के लिए जानकारी हासिल करने और कुशलता प्राप्त करने में लाभदायक सिद्ध होगी।

— टी. माधवन  
मुख्य अन्वेषक और  
परियोजना समन्वयक

दिसम्बर, 1988

## आभार

हम एन.आई.एम.एच. के उन सभी व्यक्तियों के प्रति हार्दिक आभार प्रकट करते हैं जिन्होंने इस पुस्तिका के पहले तीन प्रारूपों पर अपने अमूल्य सुझाव हमें दिए । हम परियोजना सलाहकार समिति के सदस्य प्रो. एन के जंगिरा, श्री पी जयचंद्रन और डॉ.के. मोहन ईसाक को उनके द्वारा दिए गए अनवरत निर्देशन के लिए धन्यवाद देते हैं । यूनिसेफ भी हमारे धन्यवाद के पाव हैं जिन्होंने इस परियोजना के लिए हमें वित्तीय सहायता दी । सामाजिक कार्य, स्नातकोत्तर विश्वविद्यालय हैदराबाद के प्रिंसिपल, स्टाफ एवं छात्रों द्वारा इस पुस्तिका के क्षेत्र परीक्षण में दी गई सहायता के प्रति भी हम बहुत आभारी हैं ।

श्री डी.जे.के. कॉर्नोलियस, मानवसेवी निर्देशक, नवज्योति ट्रस्ट, मद्रास और बेलूर को उनकी अनुग्रहपूर्ण प्रस्तावना के लिए हमारा धन्यवाद । सुश्री विजयालक्ष्मी माईरेड्डी और सुश्री श्यामला कुमारी, अनुसंधान स्टाफ को भी धन्यवाद जिन्होंने इस परियोजना के प्रारम्भिक चरणों में हमारी मदद की । हम श्री के. नागेश्वर राव, चित्रकार को धन्यवाद देते हैं जिन्होंने अर्थपूर्वक चित्र बनाने का काम किया यद्यपि इस कार्य के दौरान कई बार परिवर्तन भी करने पड़े थे । हम श्री सुब्रामण्यम और उनके कार्मिकोंके दल, न्यू ईरा प्रिंटर्स, सिकन्दराबाद के अत्यधिक आभारी हैं जिन्होंने बड़ी रूप और उत्साह से इस पुस्तिका का मुद्रण किया । पाण्डुलिपियोंके टंकण में श्री ए. वेंकटेश्वर राव और कु.पी. नागरानी द्वारा दी गई सहायता के प्रति हम अपना हार्दिक आभार प्रकट करते हैं ।

— टी. माधवन

## पहला अध्याय-1

### परिभाषा एवं वर्गीकरण

#### उद्देश्य :

यह अध्याय पूरा कर लेने के बाद परामर्शक निम्नलिखित कार्य कर सकेगा :

1. मानसिक मंदन की परिभाषा ।
2. मानसिक मंदन के घटकों का स्पष्टीकरण ।
3. चिकित्सीय, मनोवैज्ञानिक और शैक्षणिक वर्गीकरण ।
4. भारत में मानसिक मंदन की व्यापकता का वर्णन ।
5. मानसिक रूप से मंद व्यक्तियों के विभिन्न वर्गों के कार्यात्मक स्तर की सूची ।

## पहला अध्याय-1 परिभाषा और वर्गीकरण

मानसिक मन्दन, मानसिक न्यूनता, मानसिक अपसामान्यता और मानसिक विकलांगता एक ही दशा का उल्लेख करने के लिए इस्तेमाल किए जानेवाले अलग-अलग शब्द हैं। गत समय में प्रयोग किए जाने वाले शब्द जैसे बुद्धिदुर्बलता, मूर्खता, मन्दबुद्धि, क्षीण बुद्धि, मूढ़ और मंदमनस्कता अब प्रचलित नहीं हैं।

### परिभाषा

मानसिक मंदन की कई परिभाषाएँ हैं। इनमें से तब से व्यापक परिभाषा वह है जो मानसिक मंदन से सम्बन्धित अमेरिकी संस्था (ए.ए.एम.आर.) द्वारा दी गई है। वर्ष 1983 में दी गई यह परिभाषा इस प्रकार है

मानसिक मन्दन स्पष्ट रूप से औसत से कम ऐसी बौद्धिक प्रक्रिया है जिसके परिणामस्वरूप अनुकूली व्यवहार में संगामी अपसामान्यता आ जाती है या जो संगामी अपसामान्यता से जुड़ी होती है और जो विकासात्मक अवधि के दौरान अभिव्यक्त होती है।

“सामान्य बौद्धिक प्रक्रिया” इस प्रयोजन के लिए विकसित और क्षेत्र/देश विशेष की परिस्थितियों के अनुकूल बनाए गए मानकीकृत सामान्य बौद्धिक परीक्षण किए जाने पर प्राप्त होने वाले परिणामों को सामान्य बौद्धिक प्रक्रिया कहा जाता है।

“स्पष्ट रूप से औसत से कम” से अभिप्राय है बुद्धि के मानकीकृत माप पर 70 या उससे कम बुद्धिलब्धि। बुद्धिलब्धि की अधिकतम सीमा का अभ्यास दिशानिर्देशन देना है, इसे 75 या उससे अधिक भी बढ़ाया जा सकता है। यह वृद्धि प्रयुक्त बुद्धि परीक्षण की विश्वसनीयता के अनुसार की जा सकती है।

“अनुकूली (अडेप्टिव) व्यवहार” वह स्तर है जिस पर कोई व्यक्ति विशेष आत्म-निर्भरता और सामाजिक उत्तरदायित्व के उन मानकों को पूरा करता है जिसकी उस आयु और सांस्कृतिक समूह के व्यक्तियों से अपेक्षा की जाती है। अनुकूली व्यवहार की अपेक्षाएँ कालानुक्रमिक आयु से भिन्न होती हैं। अनुकूली व्यवहार में होने वाली कमी निम्नलिखित क्षेत्रों में देखने को मिलती है :

- शैशवावस्था और बाल्यावस्था में

1. संवेदी और गामक कौशल विकास
2. सम्प्रेषण कौशल (जिसमें वाक्शक्ति और भाषा भी शामिल है)
3. स्वावलंबन कौशल
4. सामाजिकीकरण

-बाल्यावस्था और किशोरावस्था में

5. बुनियादी शैक्षिक कौशल को दैनिक क्रियाकलाप लागू करना
6. परिस्थिति के नियंत्रण में उपयुक्त तर्क और विवेक के प्रयोग को लागू करना
7. सामाजिक कौशल

- किशोरावस्था के अंतिम वयस्क जीवन में प्रवेश करने पर

8. व्यावसायिक एवं सामाजिक उत्तरदायित्व एवं कार्य-निष्पादन

(विकासात्मक अवधि से अभिप्राय है - गर्भधारण के समय से लेकर 18 वर्ष की आयु तक के बीच की अवधि)

### वर्गीकरण

वर्गीकरण के उद्देश्य इस प्रकार है :

1. विश्व में स्वीकार्य, एकरूप प्रणाली के प्रयोग में सहायता
2. नैदानिक, चिकित्सिक और अनुसंधान प्रयोजनों में सहायता, और
3. मानसिक मन्दन की रोकथाम के प्रयासों को सुकर बनाना ।

मानसिक मन्दन का वर्गीकरण भिन्न भिन्न प्रकार से किया जा सकता है । तालिका-1 में दिए गए अनुसार इन्हें चिकित्सा, मनोविज्ञान और शिक्षा के आधार पर वर्गीकृत किया जाता है । चिकित्सीय वर्गीकरण मानसिक मन्दन के कारणों के आधार पर, मनोवैज्ञानिक वर्गीकरण बौद्धिक स्तर और शैक्षणिक वर्गीकरण मानसिक रूप से मंदव्यक्ति/बच्चे के कार्य करने के वर्तमान स्तर पर आधारित होता है ।

### तालिका - I

#### मानसिक मन्दन का वर्गीकरण

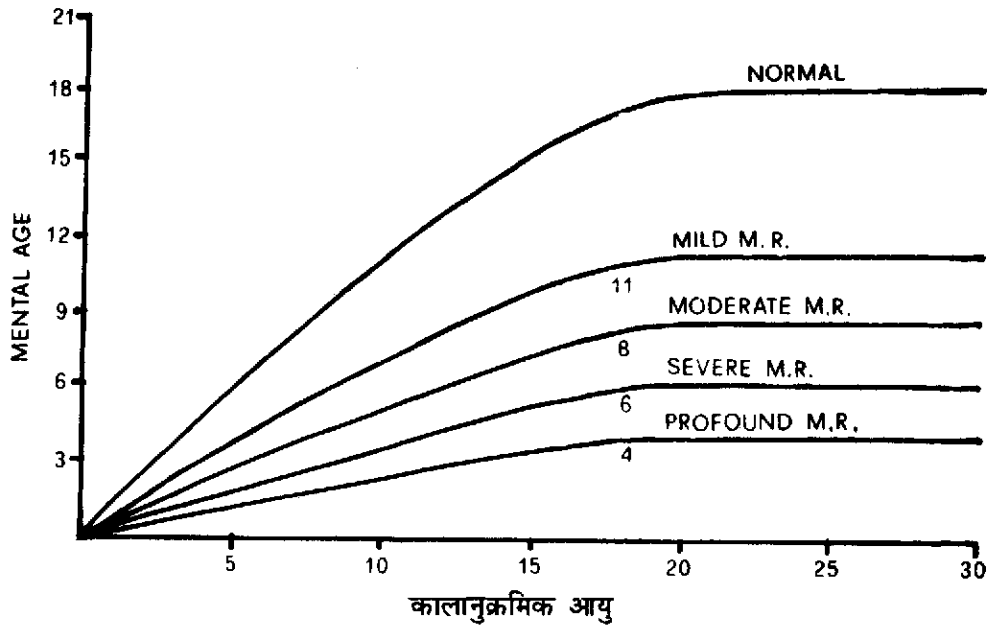
<u>चिकित्सिक</u>	<u>शैक्षणिक</u>
1. संक्रमण और नशा	1. शिक्षणीय
2. मानसिक अथवा शारीरिक कारक	2. प्रशिक्षणीय
3. उपपाचन या पोषण	3. अभिरक्षणीय
4. मानसिक रोग (जन्मोत्तर)	<u>मनोवैज्ञानिक</u>
5. जन्मपूर्व अज्ञात प्रभाव	1. अल्प (50-70)
6. गुणसूत्री असामान्यता	2. अत्यल्प (35-49)
7. गर्भधारण संबंधी रोग	3. गम्भीर (20-34)
8. मनोविकार	4. अतिगम्भीर (20 से कम)
9. पर्यावरणीय प्रभाव	
10. अन्य प्रभाव	

ये विभिन्न वर्गीकरण उस स्तर की जानकारी देते हैं जिस स्तर पर मानसिक रूप से मंद व्यक्ति अपनी शिक्षा, उपयुक्त व्यवहार और अपनी आत्मनिर्भरता की सीमा के अनुरूप कार्य करता है। मानसिक रूप से मंद व्यक्तियों के लक्षण उनकी मन्दन के स्तर के अनुसार भिन्न भिन्न होते हैं। मानसिक मन्दन के विभिन्न स्तरों को वर्णित करने के लिए वर्तमान समय में प्रयुक्त शब्द हैं - अल्प, अत्यल्प, गम्भीर और अतिगम्भीर। मानसिक मन्दन के भिन्न भिन्न स्तरों वाले व्यक्तियों के लक्षण तालिका -II में दिए गए हैं।

यह जरूरी नहीं कि, हर मानसिक रूप से मंद व्यक्ति उपरोक्त वर्णन में एक दम पूरा उतरे। हर व्यक्ति में विशिष्ट गुण अवगुण होते हैं। तालिका में दिए गए मानसिक रूप से मंद व्यक्तियों के विभिन्न समूहों के विवरण कभी कभी किसी निश्चित मामले में परस्पर व्याप्त हो सकते हैं।

किसी व्यक्ति को मानसिक रूप से मंद की श्रेणी में, विशेषकर अल्प मानसिक रूप से मंद की श्रेणी में, रखने से पहले, कुछ कारकों पर विचार करना पड़ता है। ऐसा हो सकता है कि, छोटे सामाजिक-आर्थिक वर्गों कम अंक प्राप्त हों और उन्हें मानसिक रूप से मंद बता दिया जाए। यद्यपि वे अपनी संस्कृति के मानदण्डों के अनुसार सामान्य सीमाओं के भीतर ही कार्य कर रहे होंगे। अतः किसी भी व्यक्ति को मानसिक रूप से मंद बताने से पहले सतर्कता से उसका विश्लेषण किया जाना चाहिए।

मानसिक रूप से मंद की विभिन्न श्रेणियों में कोई व्यक्ति अधिकतम कितनी मानसिक आयु प्राप्त कर सकता है, यह चित्र - 1 में दर्शाया गया है।



चित्र - 1 मानसिक आयु की तुलना में मानसिक मन्द का स्तर

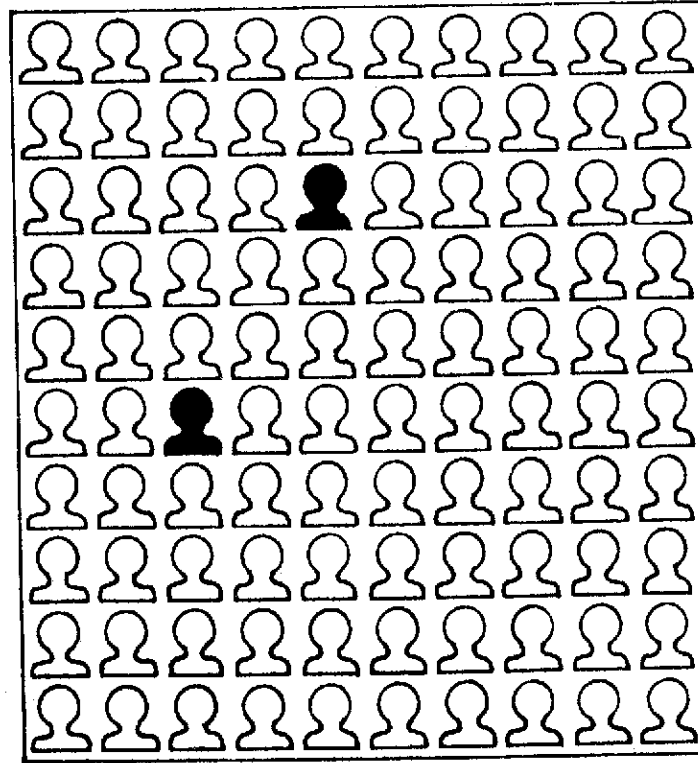
तालिका-11 विभिन्न स्तर के मानसिक मंद व्यक्तियों के लक्षण

विवरण/गम्भीरता का स्तर	अल्प	सामान्य	गम्भीर	अतिगम्भीर
प्राक् प्री-स्कूल 0-5 वर्ष	सामाजिक एवं सप्रेषण कौशल विकसित कर सकता है, संवेदी प्रेरक गामक क्षेत्रों में न्यून मन्दन, प्रायः बड़ी आयु तक सामान्य से भिन्न नहीं दिखाई पड़ती हैं।	बातचीत कर सकता है या सम्प्रेषण सीख सकता है, कम सामाजिक जागरूकता उचित गामक विकास, प्रशिक्षण से स्वावलंबन में लाभ, सामान्य देखभाल से इनकी देखरेख की जा सकती है।	अपर्याप्त प्रेरक गामक विकास अल्पतम बोली, सामान्यतः प्रशिक्षण से आत्म-सहायता में लाभ, सामान्य देखभाल से इनकी देखरेख की जा सकती है।	पूर्णतः मंद संवेदी प्रेरक क्षेत्रों में कार्य करने की क्षमता अल्पतम, उपचर्या देखभाल की आवश्यकता।
शिक्षा आयु 6-20 वर्ष प्रशिक्षण एवं शिक्षण	किशोरावस्था के अंतिम चरण तक लगभग छठी कक्षा तक शैक्षणिक कौशल प्राप्त कर सकता है, सामाजिक स्थिरिकरण की ओर निर्देशित किया जा सकता है।	सामाजिक एवं व्यावसायिक कौशल में प्रशिक्षण से लाभ प्राप्त कर सकता है, शैक्षणिक विषयों में दूसरी कक्षा से आगे बढ़ने की सम्भावना नहीं, परिचित स्थानों पर अकेले जाना सीख सकता है।	बातचीत कर सकता है सप्रेषण सीख सकता है स्वास्थ्य की बुनियादी आदतों में प्रशिक्षित किया जा सकता है, आदतें विकसित करने के लिए दिए गए क्रमबद्ध प्रशिक्षण से लाभान्वित हो सकता है।	गामक विकास कुछ सीमा तक मौजूद स्वावलंबन में अल्पतम या सीमित प्रशिक्षण के प्रति प्रतिक्रिया दिखाता है।
वयस्क 21 वर्ष और अधिक आयु सामाजिक एवं व्यावसायिक उपयुक्तता	सामान्यतः न्यूनतम स्वावलंबन के लिए उपयुक्त सामाजिक एवं व्यावसायिक कौशल प्राप्त कर सकता है किन्तु असामान्य सामाजिक एवं आर्थिक तनाव के दौरान उसे मार्गदर्शन एवं सहायता की आवश्यकता हो सकती है।	अश्रित स्थितियों में अकुशल या अर्थ कुशल कार्य में आत्मनिर्वाह कर सकता है अल्प सामाजिक एवं आर्थिक तनाव की स्थिति में देखभाल और मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है।	पूर्ण देखभाल में आत्मनिर्वाह में आशिक योगदान दे सकता है, नियंत्रित वातावरण में अल्पतम उपयोग स्तर तक स्वतः संरक्षण कर सकता है।	कुछ सीमा तक प्रेरक एवं वाणी विकास अपनी देखभाल अतिसीमित हद तक कर सकता है, उपचर्या देखभाल की आवश्यकता होती है।

संयुक्त राज्य के स्वास्थ्य, शिक्षा एवं कल्याण विभाग पी 2 संयुक्त राज्य सरकार मुद्रण कार्यालय, वाशिंगटन डी.सी., 1963, को मानसिक मंदन संबंधी गतिविधियों से लिए गए। मनोरोगीविज्ञान को विस्तृत पाठ्यपुस्तक/तृतीय संस्करण के आधुनिक सारांश (मॉडर्न सिनाप्सिस) में मुद्रित-संपादक-हेराल्ड। कल्पान एण्ड बैजामिन, जे सेडोक्क विलियम्स और विल्कन्स कम्पनी, - वल्टीमोर - 1961.

## व्यापकता :

सामान्यतः माना जाता है कि, कुल आबादी में 2% व्यक्ति मानसिक रूप से मंद होते हैं । हालांकि भारत में मानसिक मंदन की व्यापकता निर्धारित करने के लिए कोई व्यवस्थित राष्ट्रीय सर्वेक्षण नहीं किया जाता । हाल ही में यह अनुमान लगाया गया है कि, भारत में 2 करोड़ (20 मिलियन) व्यक्ति ऐसे हैं जो अल्प मानसिक मंद हैं और लगभग 40 लाख व्यक्ति ऐसे हैं जो सामान्य रूप से या गम्भीर रूप से मानसिक मंद हैं । भारत में मानसिक मंदन की व्यापकता निर्धारित करने के लिए किए गए विभिन्न अध्ययनों के विवरण तालिका-III में दिए गए हैं । तालिका से देखा जा सकता है कि, भारत में मानसिक मंदन की व्यापकता के आंकड़े 0.22 से 32.7 प्रति हजार जनसंख्या से भिन्न हैं । ऐसा इसलिए है क्योंकि, सभी अध्ययनों में प्रतिचयन की विधि, समय, जनसंख्या का प्रकार और नमूने का आकार एक समान नहीं था और मानसिक मंदन के मामले की सक्रियात्मक परिभाषा एक अध्ययन से दूसरे अध्ययन में भिन्न भिन्न थी । इसके अलावा, ये सर्वेक्षण मनोवृत्ति की दर का पता लगाने के आशय से किए गए थे नकि "अपने आप में मानसिक मंदन का पता लगाने के लिए ।



भारत में मानसिक मंदन - 2 %



तालिका-III विभिन्न स्तर के मानसिक मंद व्यक्तियों के लक्षण

क्रम सं.	अन्वेषक	वर्ष	स्थान	अध्ययन के लिए ली गई जनसंख्या	समुदाय का प्रकार	व्यापकता प्रति 1,000 जनसंख्या
1.	सूर्य और अन्य	1964	पाडिचेरी	2,731	शहरी बस्ती	0.7
2.	सेठी और अन्य	1967	लखनऊ	1,733	शहरी	22.5
3.	गोपीनाथ	1968	बगलौर	423	ग्रामीण	4.72
4.	दूबे	1970	आगरा	29,468	मिश्रित	3.7
5.	इलनगर	1971	हुगली	1,383	ग्रामीण	1.4
6.	सेठी और अन्य	1972	लखनऊ	2,691	ग्रामीण	25.3
7.	वर्गाज	1973	विल्लोर	2,904	शहरी	3.2
8.	सेठी और अन्य	1974	लखनऊ	4,481	शहरी	10.5
9.	ठाकुर और अन्य	1975	लखनऊ	2,696	शहरी	14.0
10.	नन्दी	1975	कलकत्ता	1,060	ग्रामीण	2.8
11.	नन्दी	1976	कलकत्ता	1,078	ग्रामीण	3.7
12.	कारस्टेयर्स और कपूर	1976	कोटा	9,111	ग्रामीण	10.0
13.	नन्दी	1980	कलकत्ता	4,053	ग्रामीण	8.6
14.	नन्दी	1980	कलकत्ता	1,864	मिश्रित	10.7
15.	शाह	1980	अहमदाबाद	2,712	शहरी	1.8
16.	आइज़क और कपूर	1980	बगलौर	4,209	ग्रामीण	3.6
17.	शालिनी	1982	बगलौर	451	ग्रामीण	32.7
18.	आई सी एम आर	1983	बगलौर	35,548	ग्रामीण	1.32
19.	आई सी एम आर	1983	बडौदा	39,655	ग्रामीण	2.33
20.	आई सी एम आर	1983	कलकत्ता	34,582	ग्रामीण	0.58
21.	आई सी एम आर	1983	पटियाला	36,595	ग्रामीण	0.22

## सारांश

1. मानसिक मंदन को ए.ए.एम.आर. परिभाषा में दिए गए मानसिक मंदन के संघटक इस प्रकार हैं : स्पष्ट रूप से औसत से कम बौद्धिकता, अनुकूली व्यवहार (अडेप्टिव बिहैवियर) में असामान्यता और 18 वर्ष की आयु से पहले अभिव्यक्ति (मैनिफेस्टेशन) ।
2. मानसिक मंदन का चिकित्सय मनोवैज्ञानिक और शैक्षणिक वर्गीकरण क्रमशः मानसिक मन्दन के कारणों बौद्धिक स्तर और कार्य करने के वर्तमान स्तर पर आधारित है । मानसिक ब व्यक्तियों का प्रत्येक समूह का कार्यात्मक स्तर दिया गया है ।
3. भारत में मानसिक मंदन की व्यापकता अनुमानित: इसकी जनसंख्या का 2% है । मानसिक मंदन पर कई अध्ययन किए गए जिनमें पाए गए आंकड़े 0.22 से लेकर 32.7 प्रति हजार जनसंख्या के बीच हैं ।

## स्वमूल्यांकन - I

1. मानसिक मन्दन की ए ए एम आर परिभाषा के संघटक इस प्रकार हैं :-  
क. ----- ख. ----- ग. -----
2. भारत की लगभग ----- % जनसंख्या को मानसिक रूप से मंद समझा जाता है ।
3. भारत में मानसिक मंदन को व्यापकता में विभिन्नता है । इन भिन्नताओं का कारण सम्भवतः निम्न लिखित में एकरूपता का अभाव हो सकता है :-  
क.  
ख.  
ग.
4. निम्नलिखित के जोड़े बनाइये  

1. बुद्धिलब्धि स्तर	क. चिकित्सय	( )
2. कार्यात्मकता का स्तर	ख. मनोवैज्ञानिक	( )
3. मानसिक मंदन के कारण	क. अनुकूली व्यवहार	( )
4. मानसिक मंद व्यक्तियों में कमी	क. चिकित्सय	( )
5. निम्नलिखित के जोड़ बनाइये  

1. गम्भीर	क. 50-70	( )
2. अल्प	ख. 35-49	( )
3. सामान्य	ग. 20 से कम	( )
4. अतिगम्भीर	घ. 20-34	( )

6. नीचे दी गई बातों को ध्यान से पढ़ें और बताए कि ये सही है या गलत :

1. पांच वर्षीय एक अल्प मानसिक रूप से मन्द बच्चे और पांच वर्षीय एक सामान्य बच्चे में विकास के कई क्षेत्रों में अंतर नहीं किया जा सकता । सही/गलत
2. 15 वर्षीय सामान्य रूप से मानसिक रूप से मंद व्यक्ति शैक्षणिक विषयों में पांचवी कक्षा से आगे बढ़ सकता है । सही/गलत
3. 21 वर्ष की आयु के गम्भीर मानसिक रूप से मंद व्यक्ति को सभी व्यावसायिक कौशलों में प्रशिक्षित किया जा सकता है और वह अपना व अपने परिवार वालों का भरण-पोषण कर सकता है । सही/गलत
4. 12 वर्षीय अतिगम्भीर रूप से मानसिक रूप से मंद बच्चा स्वावलंबन कौशल में प्रशिक्षण दिए जाने पर प्रतिक्रिया दिखाएगा । सही/गलत
5. 25 वर्षीय अल्प मानसिक रूप से मंद व्यक्ति विश्वविद्यालय पूर्व परीक्षा उत्तीर्ण कर सकता है । सही/गलत

## दूसरा अध्याय-2

### कारण एवं रोकथाम

#### उद्देश्य :

यह अध्याय पूरा कर लेने के बाद परामर्शक निम्नलिखित कार्य कर सकेगा :

1. मानसिक मंदता के प्रसव पूर्ण तथा प्रसवोत्तर कारण बता सकेंगे ।
2. मानसिक मंदता की रोकथाम के लिए मापन बता पाएंगे ।
3. मानसिक मंदता से जुड़ी समस्याएं मिर्गी पोषण संबंधी विकार, अतिगतिशीलता, मनोविकारी विक्षोभ, तथा बहु विकलांगता ।

## दूसरा अध्याय-2

### कारण एवं रोकथाम

कारण : मानसिक मन्दन के कई कारण होते हैं । इन्हें मोटे तौर पर प्रसवपूर्व, प्रसाव के दौरान और प्रसव के पश्चात् से संबंधित कारणों में वर्गीकृत किया जा सकता है ।

#### प्रसवपूर्ण कारण :

1. गुणसूत्री विकार : प्रत्येक मानव कोशिका में 23 युग्म गुणसूत्र होते हैं । हर व्यक्ति को अपनी माता और अपने पिता से आधे आधे गुणसूत्र प्राप्त होते हैं । गुणसूत्रों में त्रुटि होने से चिकित्सा सम्बन्धी समस्याओं की दशाएँ उत्पन्न होती हैं जिनमें से अधिकांश दशाएँ मानसिक मन्दन का कारण बन जाती हैं । यह त्रुटि गुणसूत्रों की संख्या में हो सकती है जो बहुत अधिक या बहुत कम हो सकती है, या फिर यह त्रुटि गुणसूत्रों की संरचना में हो सकती है । गुणसूत्रों की संख्या में त्रुटि होने के कारण होने वाली एक आम दशा है - डाऊन सिंड्रोम । इस दशा में सामान्यतः संख्या 21 पर एक अतिरिक्त गुणसूत्र होता है । इसके कारण डाऊन्स सिंड्रोम व्यक्तियों में असाधारण शारीरिक लक्षण पाए जाते हैं, जैसे बीच में अधिक अंतराल लिए हुए तिरछी आंखें, दबा हुआ नासादड, खुलामुह, मोटी जीभ नीचे की ओर, छोटे कान, छोटे अंग, छोटी अंगुलियाँ, विशिष्ट करतल सुकड़न, आदि ।
2. आनुवंशिक विकार : सन्तान में माता-पिता से संचारित जीन में दोष के कारण मानसिक मन्दन की कुछ दशाएँ उत्पन्न हो सकती हैं । हो सकता है कि, माता-पिता में वह दोष न हो, या फिर अगर हो तो भी सम्भव है कि मानसिक मन्दता की दशा उनमें दिखाई न दें । आनुवंशिक विकार कई प्रकार के माने गए हैं इनमें से कुछ आनुवंशिक विकारों में चयापचयी असामान्यता होती है और हो सकता है कि, विशिष्ट एन्जाइम कम या फिर हो ही नहीं । इसके परिणामस्वरूप शरीर और मस्तिष्क में विशिष्ट तत्व एकत्रित हो जाते हैं जिससे मस्तिष्क को क्षति पहुंचती है । इसके कारण मानसिक मन्दता होती है । ऐसे आनुवंशिक विकारों के कुछ उदाहरण हैं - फेनिलकोटोनुरिया, म्यूकोपॉलीसैकराइडासिस, लिपिडोसेस् आदि ।
3. माता में संक्रमण, विशेषकर गर्भावस्था के पहले तीन महीनों के दौरान होने वाले संक्रमण गर्भ के विकसित होते मस्तिष्क को क्षति पहुंचा सकते हैं । गर्भ पर बुरा असर डालने वाले कुछ संक्रमण हैं - खसरा (रूबेला) (जर्मन मीसल्लज) हपिज और साइटोमिगेली अभिव्याप्ति रोग, टोक्सोप्लेस्मोसिस, सिफिलिस, ट्यूबरकुलोसिस ।
4. माता में होने वाली बीमारियाँ जैसे मधुमेह और उच्च रक्त दाब, गुदों में होने वाली पुरानी बीमारियाँ, और माता का कुपोषण बढ़ते हुए गर्भ को नष्ट कर सकते हैं । माता में अवटु अल्पक्रिया जैसी बीमारी के कारण बौना बच्चा पैदा हो सकता है । माता में अत्यधिक अवटु होने से (हायपरथायरोयडिज़्म) बढ़ते हुए गर्भ के केन्द्रीय तंत्रिका पद्धति में खराबी हो सकती है जिससे मानसिक मन्दता हो जाती है ।
5. गर्भावस्था के प्रारम्भिक महीनों में एक्स-किरण के प्रभाव से, हानिकारक दवाइयाँ खाने से, विशेषकर ऐसी दवाइयाँ को कैसर के निदान के लिए खाई जाती है, कुछ आपस्मारोधी दवाओं और हार्मोन्स से बढ़ता हुआ भ्रूण नष्ट हो

सकता है। माता को ऐसे दौरे पडना जिनका इलाज न किया गया हो और गिरने से पेट पर लगने वाली चोट से बढ़ता हुआ भ्रूण नष्ट हो सकता है और इस कारण मानसिक मन्दन हो जाता है।

6. केन्द्रीय तंत्रिका तंत्र के जन्मजात दोष जैसे जलशीर्ष, लघुशिरस्कता और मस्तिष्क और रीढ़ की हड्डी के कई दोष मानसिक मन्दन से जुड़े हैं।

### प्रसव के दौरान कारण

मानसिक मन्दन के कुछ कारण जो प्रसव के दौरान उत्पन्न हो जाते हैं, वे इस प्रकार हैं :-

1. विभिन्न कारणों से समयपूर्व जन्म (28 हफ्तों और 34 हफ्तों के बीच जन्म होना)
2. जन्म के समय कम वजन वाले शिशु (2 कि.ग्रा. से कम)
3. जन्म के तुरंत बाद सांस न लेना (मस्तिष्क को यदि 4 या 5 मिनट के लिए आक्सीजन न मिले तो उसे ऐसी क्षति पहुंचती है जिसे ठीक नहीं किया जा सकता)।
4. भ्रूण के सिर और जनन मार्ग का अनुपात सही न होने या लम्बे समय तक प्रसव पीडा होने या उपकरणों के अनुपयुक्त प्रयोग के कारण अतिरिक्त शीर्षानुकूलन जैसे कारणों से नवजात शिशु के सिर को लगने वाली चोट।
5. गर्भाशय में भ्रूण की अपसामान्य स्थिति।
6. भ्रूण की गर्दन के चारों ओर नाभिनाल का अत्यधिक कुण्डलीकरण।
7. गर्भनाल की अपसामान्य स्थिति।
8. माता में उक्त रक्तचाप होने और दौरे पडने के साथ साथ गर्भहेतुक विरक्तता।
9. नवजात शिशु के मस्तिष्क में विभिन्न कारणों से रक्त स्राव।
10. नवजात शिशु को विभिन्न कारणों से गम्भीर पीलिया।
11. माता को दी गई दवाइयां जैसे बैहोशी की दवाइयां या पीडानाशक दवाइयां।

### प्रसवोत्तर कारण

1. बच्चे में कुपोषण : मस्तिष्क को गर्भ-जीवन के बारह वें से अठारह वें सप्ताह के दौरान जब स्नायु कोशिकाएं बहुत तेजी से बढ़ती हैं, और जन्म के समय से लेकर दो वर्ष की आयु पूरी होने तक की अवधि के दौरान, कुपोषण के कारण क्षति होने की सम्भावना बनी रहती है।
2. बच्चे में मस्तिष्क शोध और मस्तिष्कावरण शोध जैसे सक्रमण (मस्तिष्क ज्वर) मानसिक मंदन का कारण बन सकते हैं।
3. बच्चे को बार बार दौरे पडने से मस्तिष्क को क्षति पहुँच सकती है और यह मानसिक मंदन का कारण बन सकता है।
4. दुर्घटना से या गिर जाने से दिमाग पर लगने वाली चोट मानसिक मन्दन का कारण बन सकती है।

## रोकथाम

कारण जान लेने पर, देखे कि, इन्हें कैसे रोका जा सकता है । इन कारणोंकी रोकथाम को मोटे तौर पर तीन चरणों में वर्गीकृत किया जा सकता है ।

1. प्रसवपूर्व समय
2. प्रसव के दौरान की अवधि
3. प्रसवोत्तर अवधि

### प्रसवपूर्व अवधि :

- क. समय समय पर गर्भवती महिला की डॉक्टरी जांच करवाना अत्यन्त महत्वपूर्ण है । गर्भवती महिला को पौष्टिक आहार दिया जाना चाहिए । यदि पहले हुई प्रसूतियों में कोई विकृति हुई हो या फिर बार बार गर्भपात हुआ हो तो उसे अधिक जांच के सम्पूर्ण सुविधाओं वाले किसी अस्पताल में भर्ती किया जाना चाहिए ।
- ख. गर्भवती महिला को डॉक्टर के बताए बिना दवाई नहीं लेनी चाहिए ।
- ग. यदि गर्भवती महिला गर्भपात करवाना चाहती हो तो उसे अप्रशिक्षित लोगों का सहारा न लेकर किसी योग्य डॉक्टर से गर्भपात करवाना चाहिए ।
- घ. गर्भवती महिला को विशेषकर गर्भावस्था की प्रारम्भिक अवस्थाओं में एक्स-रे नहीं करवाने चाहिए ।
- ङ. गर्भवती महिला को खसरा और टेटनस जैसे रोगों से बचाव के लिए टीके लगवाने चाहिए ।
- च. यदि गर्भवती महिला को उच्च रक्तचाप हो या उसे बार बार दौरे पडते हों तो उसे निरन्तर डॉक्टरी जांच करवाते रहना चाहिए ।
- छ. गर्भावस्था के दौरान अधिक श्रमपूर्ण कार्य जैसे भारी वजन उठाना, विशेषकर खेतों में और अन्य कार्य जिनसे दुर्घटना होने की सम्भावना हो, जैसे फिसलन वाली जगह पर चलना, छोटे स्टूल और कुर्सियों पर चढ़ने से बचना चाहिए ।
- ज. यदि पहले भी आनुवांशिकता की समस्या वाली कोई सन्तान रही हो तो गर्भवती महिला को ऐसे स्थानों पर भेजा जाना चाहिए जहां गर्भ में ऐसी अपसामान्यताओं के परीक्षणों की सुविधा उपलब्ध हो ।

### प्रसव के दौरान की अवधि :

- क. मानसिक मंदन के कई मामले प्रसव के दौरान मस्तिष्क को नुकसान पहुंचने के कारण होते हैं । बच्चे के जन्म के दौरान होने वाली कठिनाइयां, भारत जैसे विकासशील देशों में मानसिक मंदन आम कारण होती हैं क्योंकि, यहाँ पर विशेषों की सेवाएं हमेशा उपलब्ध नहीं होती । प्रसव के दौरान उचित देखभाल से मानसिक मंदन से बचा जा सकता है ।

- ख. प्रसव प्रशिक्षित चिकित्सा कर्मियों से ही करवाया जाना चाहिए । पैचीदा स्थितियों का शीघ्र पता लगाया जाना चाहिए और किसी सुयोग्य डॉक्टर को तात्कालिक स्थिति के बारे में बताया जाना चाहिए ।
- ग. यदि गर्भाशय में गर्भ की स्थिति असामान्य हो तो प्रसव किसी योग्य चिकित्सक से ही करवाया जाना चाहिए ।
- घ. जन्म के समय यदि बच्चा नीला हो या वह जन्म के तुरन्त बाद रोए नहीं तो उसे तत्काल ऑक्सीजन दिया जाना चाहिए । यह सुनिश्चित कर लिया जाना चाहिए कि वह ठीक से सांस ले रहा हो ।
- ङ. कोई जन्मजात अपसामान्यता पाई जाने पर बच्चे को इलाज के लिए विशेषज्ञ के पास भिजवा दिया जाना चाहिए ।

### प्रसवोत्तर अवधि :

- क. बच्चे को डिफ्थीरिया, पोलियो, टेटेनस, खसरा, तपेदिक और काली खासी जैसे सभी संक्रामक रोगों से बचाव के लिए टीके लगाए जाने चाहिए ।
- ख. यदि बच्चे को बहुत तेज बुखार हो तो ठण्डे पानी की पट्टियाँ रखकर या ज्वरहर देकर तापमान (बुखार) को तत्काल कम करने का प्रयास किया जाना चाहिए ।
- ग. यदि बच्चे को दौरा पड़े तो इसे दौरों को नियंत्रित करने और दोबारा दौरा पड़ने से रोकने के लिए दवाएँ दी जानी चाहिए ।
- घ. महामारियों, विशेषकर मस्तिष्क ज्वर (मस्तिष्क शोथ) की महामारियों के होने पर, बच्चे की उचित देखभाल की जानी चाहिए और उसे मस्तिष्क शोथ के अन्य रोगियों के प्रभाव में नहीं लाया जाना चाहिए । इस बात का ध्यान रखा जाना चाहिए कि, भोजन और पानी संदूषित न हों ।
- ङ. बच्चे को पर्याप्त पोषक आहार दिया जाना चाहिए क्योंकि, उसके विकास की अवधि के दौरान कुपोषण को मस्तिष्क वृद्धि के लिए हानिकार माना जाता है ।
- च. यदि जन्म के समय बच्चे का सिर छोटा/बड़ा या उसके अग ऐसे हुए हों तो उसे अधिक अशक्तताओं से बचाने के लिए डॉक्टर के पास ले जाया जाना चाहिए ।
- छ. यदि बच्चा पहले छः महीनों में उचित अवस्थाएँ (मील पत्थर) बहुत अधिक देर से प्राप्त करता है तो विकासात्मक अशक्तताओं के सम्पूर्ण मूल्यांकन के लिए विशेषज्ञ से उसकी जांच करवाई जानी चाहिए ।  
उपर उल्लिखित पहलुओं के अलावा, निम्नलिखित बातें भी ध्यान में रखी जानी चाहिए ।
- क. यह जरूरी है कि 18 वर्ष की उम्र से पहले और 35 वर्ष की उम्र के बाद गर्भधारण न किया जाए ।
- ख. सगोत्र विवाह नहीं किए जाने चाहिए अर्थात् चचेरे, ममेरे, भाई-बहनो के बीच विवाह नहीं किए जाने चाहिए विशेषकर तब जब परिवार में पहले से कोई मानसिक मंद व्यक्ति हो ।
- ग. यदि परिवार में वंशानुगत कारणों से कोई मानसिक रूप से मंद व्यक्ति हो, तो माता-पिता को यह समझाया जाना चाहिए कि भविष्य में भी उन्हें मानसिक रूप से मंद संतान उत्पन्न होने का खतरा है ।



### मानसिक मंदन से जुड़ी समस्याएं :

कुछ मानसिक रूप से मंद व्यक्तियों में बुद्धि और अनुकूली व्यवहार में कमी के साथ साथ चिकित्सापरक समस्याएं या सम्बद्ध विकलांगता होती हैं। मानसिक रूप से मंद व्यक्तियोंमें आमतौर पर पाई जाने वाली कुछ चिकित्सापरक समस्या है - मिरगी, उतिगतिशीलता शारीरिक विकलांगता, पोषण सम्बन्धी विकार और आत्मविमोह, मनोविकृति और तन्त्रिका जन्य विक्षोभ जैसी मनोवैज्ञानिक समस्याएं।

### मिरगी :

लगभग चालीस प्रतिशत मानसिक रूप से मंद व्यक्तियों में किसी न किसी प्रकार की ऐंठन होती है। यह मस्तिष्क को पहुंची क्षति के स्वरूप के अनुसार इस ऐंठन की बारबारता, कालावधि और प्रकार भिन्न भिन्न होती है। मामूली या मध्यम रूप से मानसिक रूप से मंद व्यक्तियोंकी अपेक्षा गम्भीर या अति गम्भीर रूप से मानसिक मंद व्यक्तियों को आमतौर पर अधिक दौरें पडते हैं।

यदि किसी मानसिक रूप से मंद व्यक्ति को दौरें पडते हो तो निम्नलिखित बातों की ओर ध्यान देना चाहिये :

1. दौरों के बारे में विस्तृत विवरण, उसका स्वरूप, कालावधि, बारबारता प्रकार, कब से पडने शुरू हुए, दौरा पडने से पहले और दौरा समाप्त हो जाने के बाद के लक्षण यह सब नोट कर लिया जाना चाहिए।
2. ऐसे व्यक्ति को तत्काल डॉक्टर को दिखाया जाना चाहिए और डॉक्टर को उपर्युक्त सारी जानकारी दी जानी चाहिए और डॉक्टर द्वारा बताई गई ऐंठनरोधी दवाएं ली जानी चाहिए।
3. माता-पिता को यह बात विशेष रूप से समझाई जानी चाहिए कि, दौरों का इलाज दवाओं से किया जा सकता है और नियमित रूप से दवा लेना आवश्यक है और ऐसे व्यक्ति को समय समय पर डॉक्टर से जांच कराई जानी चाहिए।
4. दौरें पडने से सीखने की प्रक्रिया धीमी पड़ जाती है अतः किसी मानसिक रूप से मंद व्यक्ति को विभिन्न कार्यों या कौशलों में प्रशिक्षित करते समय प्रशिक्षण प्रक्रिया के दौरान दौरें पडने की बात नोट कर ली जाना चाहिए।
5. जब किसी ऐसे मानसिक रूप से मंद व्यक्ति को नौकरी में रखने पर विचार किया जा रहा हो, जिसे मिरगी आती हो तो ऐसे व्यक्ति के लिए चुनी जा रही नौकरी के स्वरूप पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। मशीनरी या कटाई के औजारोंका इस्तेमाल करने वाले कार्यस्थलों, या जल सम्बन्धित कार्य या भवनों वाले कार्यों का चयन नहीं किया जाना चाहिए।

### पोषण संबंधी विकार :

1. गर्भावस्था के पहले तीन महीनों के दौरान और जन्म के समय से लेकर 2 वर्ष तक की अवधि तक मस्तिष्क का विकास तेजी से होता है।

2. कुपोषण, विशेषकर जीवन के प्रथम दो वर्षों के दौरान कुपोषण से मस्तिष्क के विकास को गम्भीर रूप से हानि पहुँच सकती है ।
3. जन्म के बाद छः मास तक बच्चे को केवल माँ के दूध पर रखने और उसके साथ साथ संपूरक भोजन न देने से शरीर में प्रोटीन, वसा, विटामिनों और खनिजों की मात्रा कम पहुँचती है जिससे विकास की गति मंद हो जाती है ।
4. कुछ मानसिक रूप से मंद बच्चों को, उनकी चबाने और निगलने की असमर्थता के कारण भोजन की अपेक्षित मात्रा नहीं दी जाती और इससे विकास की गति और भी अधिक धीमी हो जाती है ।
5. आमतौर पर होने वाले कुछ पोषण विकार हैं - प्रोटीन कैलोरी, कुपोषण, ए और बी ग्रुप के विटामिनों की कमी ।

### अतिगतिशीलता :

1. कुछ मानसिक रूप से मंद बच्चे अतिगतिशील व्यवहार दिखाते हैं और यह सामान्यतः क्षत मस्तिष्क बच्चों में पाया जाता है ।
2. अतिगतिशीलता के लक्षण इस प्रकार हैं - अत्यधिक सक्रिय होना, ध्यानान्तरण, कम अवधि के लिए ध्यान दे पाना, व्यग्रता, अंतरविरोध का अभाव, अल्प व्यवस्थित और अल्प समन्वित कार्य ।
3. ऐसे बच्चे आवेगी और आक्रामक होते हैं और इनकी मनः स्थिति बदलती रहती है ।
4. अतिगतिशीलता व्यवहार से सीखने की प्रक्रिया में गम्भीर रूप से बाधा पहुँचती है ।
5. अतिगतिशीलता व्यवहार की प्रबलता को दवाओं से कम किया जा सकता है ।
6. अतिगतिशील बालक का निर्धारण करते समय, उस स्थिति पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए जिसमें वह अतिसक्रिय होता है । कभी कभी वातावरण में उत्तेजक कारणों, माता पिता के अपर्याप्त नियंत्रण या प्रेरक वातावरण के अभाव के कारण होने वाले व्यवहार विकोभ को अतिगतिशीलता समझ लिया जाता है । इस प्रकार का आभेद करने के लिए बच्चे का ब्यौरेवार पूर्ववृत्त और उसका ध्यानपूर्वक प्रेक्षण किया जाना जरूरी है ।

### मनोविकारी विकोभ :

मानसिक मंदन में होने वाले कुछ मनोविकारी विकोभ हैं - स्वलीन व्यवहार, मनस्तापी अवस्थाएँ जैसे मनोविदलता, उन्माद और अवसाद और विक्षिप्त अवस्थाएँ जैसे चिन्ता विक्षिप्ति, और हिस्टीरियाजन्य विक्षिप्ति, स्वलीनता से मिलते जुलते लक्षण मानसिक रूप से मंद बच्चों में पाए जाते हैं जबकि, मनस्तापी और विक्षिप्त अवस्थाएँ आमतौर पर वयस्क मानसिक रूप से मंद व्यक्तियों में पाई जाती हैं । मानसिक मंदन में मानसिक बीमारी के निदान के लिए कुशल ब्यौरेवार मनोविकारी मूल्यांकन जरूरी है । यदि किसी मानसिक रूप से मंद व्यक्ति में निम्नलिखित लक्षण पाए जाते हैं तो इसे मनोरोग चिकित्सक के पास भेजा जाना चाहिए ।

1. लम्बी अवधि तक अकेले रहना ।
2. अपनेआप बडबडाते रहना और खाना खाने के लिए मना करना ।
3. अकारण आक्रामक व्यवहार करना ।
4. अत्यधिक प्रसन्न या उदास मनःस्थिति की अवस्था ।
5. नींद न आना या ठीक से लगातार नींद न आना
6. व्यवहार में आकस्मिक बदलाव ।

कई स्थितियों से मानसिक मन्दन होने का भ्रम पैदा हो जाता है । ये स्थितिया तालिका-1 में दी गई हैं :-

#### तालिका - I

##### मानसिक मंदन के संबंध के भ्रामक स्थितिया

1.	शैशवकाल के शुरु में ही स्वलीनता
2.	क्षीण श्रवण शक्ति वाला बच्चा
3.	भावात्मक विक्षोभ वाला बच्चा
4.	मानसिक विकास न होना और प्रेरणा का अभाव
5.	विशिष्ट अधिगम असमर्थता
6.	बाल्यावस्था में मनोविकृति
7.	दृष्टिदोष वाला बच्चा
8.	शारीरिक रूप से विकलांग बच्चा

#### बहु-विकलांगता :

किसी व्यक्ति को शारीरिक, श्रव्य, दृश्य और मानसिक-इन चार विकलांगताओं में से किसी भी एक से अधिक विकलांगता के होने पर उसे बहु विकलांगता की श्रेणी में रखा जाता है । बहु-विकलांग एकल विकलांगता वाले बच्चों के किसी अन्य समूह की तुलना में बहुत ही धीमी गति से बढ़ते, सीखते और विकसित होते हैं । उन्हें जीवित रहने के लिए बुनियादी बातें सीखने के लिए भी गहन प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है ।

मानसिक मंदन के साथ साथ प्रमस्तिष्कीय अंगघात का होना बहु-विकलांगता का अत्यंत सामान्य तौर पर पाये जाने वाला रूप है । प्रमस्तिष्कीय अंगघात एक ऐसी स्थिति है जिसके प्रमुख लक्षण है - ऐसी प्रेरक विक्षिप्तियां और चेष्टाओं में तालमेल का ऐसा अभाव जिसकी गम्भीरता का स्तर घटता बढ़ता रहता है । यह एक अक्रमिक दशा है और यह मस्तिष्क के कुछ हिस्सों को क्षति पहुँचने पर उत्पन्न हो जाती है । इस प्रकार की स्थिति का एक उदाहरण नीचे दिया गया है ।

## बहु विकलांगता पूर्व वृत्त केस हिस्ट्री

अनिता एक आठ वर्षीय बच्ची है। उसे दो वर्ष पहले लाया गया था और उसके बारे में यह शिकायत थी कि वह वस्तुएं पकड़ने में असमर्थ थी, उसके मुँह से लार टपकती थी, उसकी आंखों में भैगापन और अंगों में ऐंठन थी। बच्चे के पूर्ववृत्त (केस हिस्ट्री) से मालूम हुआ कि बच्ची का जन्म संदश प्रसव से बड़ी मुश्किल से हुआ था और जन्म के बाद वह देर से रोई थी। बच्चे ने गर्दन सम्भालना 1 वर्ष की आयु तक जाकर शुरू किया था और 2 वर्ष तक उसने कर वट लेना शुरू किया। विस्तृत नैदानिक जन्म करने पर जन्म अनास्किता के कारण होने वाले प्रमस्तिष्कीय अंगघात का निदान किया गया। मनोवैज्ञानिक निर्धारण करने पर पाया गया कि, उसकी बुद्धि-लब्धि 30 थी। शैक्षणिक निर्धारण करने से मालूम हुआ कि अनिता स्वयं खाना नहीं खा सकती थी, शौचादि की आवश्यकताएँ नहीं बता सकती थी, अपने कपड़े उतार या पहन नहीं सकती थी और अपने सभी निजी कार्यों के लिए दूसरों पर निर्भर थी। वह अपने माता-पिता को पहचान सकती थी। वह रोजमर्रा को चीजोंको नहीं पहचान सकती थी। वह एक ऐसी बच्ची थी जिसे गम्भीर मानसिक मन्दन के साथ प्रमस्तिष्कीय अंगघात भी था। माता पिता को बच्ची की दशा के बारे में बताया दिया गया था और उन्हें सलाह दी गई थी कि, बच्ची को लम्बे समय तक भौतिक चिकित्सा, वाक् चिकित्सा और नाना प्रकार के आत्मनिर्भरता के कार्यों में गहन प्रशिक्षण की आवश्यकता थी। बच्चे के लिए एक प्रबन्धन योजना तैयार की गई थी और माता पिता को निर्देश दिया गया था कि, संगठन में मानसिक मंद बच्चों के लिए नियमित प्रशिक्षण के अतिरिक्त वे बच्ची को घर पर भी प्रशिक्षण दे। 2 वर्ष के गहन प्रशिक्षण के बाद बच्ची बैठ सकती है, सहारा लेकर चल सकती है, कुछ सार्थक शब्द बोल सकती है, शौचादि की आवश्यकता होने पर बतला सकती है, अपने आप खाना खा सकती है और अपने कपड़े उतार सकती है। उसके मुँह से लार का टपकना बंद हो चुका है और वह पहले की अपेक्षा अधिक प्रसन्नचित है। चूंकि, माता-पिता को बच्ची की दशा की जानकारी है अतः वे बच्ची को प्रशिक्षण दे रहे व्यावसायिकों सहयोग देते हैं।

बहु विकलांग व्यक्ति एक विषमजातीय समूह बनते हैं। इन व्यक्तियोंमें समानताएं कम और अंतर अपेक्षाकृत अधिक होते हैं। उनकी असमर्थताये अलग प्रकार की और अलग अलग सीमा तक होती हैं। इनमें बौद्धिक कार्यक्षमता, प्रेरक विकास, वाक् एवं भाषा विकास, देखने और सुनने की क्षमता और अनुकूली व्यवहार का अत्यधिक अभाव शामिल होगा। एक से अधिक अवरोध होने पर ये व्यक्ति अन्य व्यक्तियोंसे अलग दिखाई देते हैं और इनका व्यवहार विसामान्य प्रतीत होता है।

बहु-विकलांग व्यक्ति की प्रत्येक अशक्तता की सीमा का पता लगा पाना कठिन है। यह निर्धारित कर पाना भी कठिन है कि किसी असमर्थ व्यक्ति के अलग अलग व्यवहार को किस प्रकार प्रभावित करते हैं। ऐसे बच्चों के लिए प्रबंधन योजना तैयार करने से पहले अलग अलग विकलांगता का ठीक ठीक निर्धारण किया जाना आवश्यक है।

### सारांश

1. मानसिक मंदन के कई कारण हैं जिन्हें प्रसवपूर्ण, प्रसव के दौरान और प्रसव के बाद के कारणों के अंतर्गत सम्मिलित किया जा सकता है। भारत मेक्रमशः इन तीन अवधियों में आमतौर पर होने वाले कारणों में शामिल है - डाउनस सिन्ड्रोम, प्रसव के दौरान होने वाली कठिनाइयाँ और मस्तिष्क के संक्रमण जैसे मस्तिष्क शोध और मस्तिष्कावरण शोध।
2. विभिन्न अवधि के दौरान किए जाने वाले विभिन्न उपाय बताए गए हैं।
3. कुछ मानसिक रूप से मंद व्यक्तियों को मन्दन से जुड़ी अन्य विकलांगताएँ या चिकित्सापरक समस्याएँ (बीमारिया) हो जाती हैं, जैसे मिरगी, अतिगतिशीलता, पोषण विकार या मनोविकारी विक्षिप्तियाँ।

### स्वमूल्यांकन - II

1. निम्नलिखित में से कौन सा मानसिक मन्दन का प्रसवपूर्ण कारण नहीं है।
  - क. एक्स-रे का प्रभाव
  - ख. जन्म अनावसिता
  - ग. रूबेला
  - घ. गुणसूत्री अपसामान्यता
2. निम्नलिखित कारणों में से भारत में मानसिक मन्दन होने का अत्यधिक सामान्य कारण कौन सा है।
  - क. माँ को मधुमेह
  - ख. जन्म के दौरान होने वाली कठिनाइयाँ
  - ग. माँ को पीलिया
  - घ. माँ को जर्मन मीज़िल्स

3. मानसिक मन्दन निम्नलिखित कारणों से हो सकता है :
- क. गर्भावस्था के दौरान माँ के साथ दुर्व्यवहार
  - ख. मानसिक रूप से मंद व्यक्तियों के साथ उठना बैठना
  - ग. 35 वर्ष की आयु के बाद गर्भावस्था
  - घ. अभिचार
4. प्रसव के बाद की अवधि के दौरान मानसिक मन्दन की रोकथाम के उपाय बताएं:
- क.
  - ख.
  - ग.
  - घ.
5. जिस मानसिक रूप से मंद व्यक्ति को दौरे पडते हों
- क. उसके दौरो पर नियंत्रण नहीं किया जा सकता ।
  - ख. उसमें व्यवहार संबंधी समस्याएं हमेशा बनी रहती है ।
  - ग. बार बार दौरे पडने से सीखने की प्रक्रिया अवरुद्ध होती है ।
  - घ. ऊपर दी गई बातों में से कुछ नहीं ।
6. "अतिगतिशीलता" में निम्नलिखित में से किस एक को छोडकर अन्य सभी शामिल है ।
- क. अत्यधिक सक्रियता
  - ख. ध्यानान्तरण और ध्यान दे पाने की अल्प अवधि
  - ग. शून्य में देखना
  - घ. अंतर विरोध का अभाव और अल्प समन्वित कार्य

7. ऐसी चार स्थितियां बताएं जिनसे मानसिक मंदन का भ्रम होता है

क.

ख.

ग.

घ.

8. बहु विकलांगता का अत्यन्त सामान्य रूप है -

क. डाउन्स सिन्ड्रोम

ख. मानसिक मंदन के साथ प्रमस्तिष्कीय अंगघात

ग. सीख पाने की असमर्थता

घ. छोटे सर के साथ मानसिक मंदन ।

## तीसरा अध्याय - 3

### पहचान और परामर्श

#### उद्देश्य :

यह अध्याय पूरा कर लेने के बाद निर्देशन काउंसलर निम्नलिखित कार्य कर सकेगा :

1. विकास की 25 ऐसी सामान्य अवस्थाएँ (मीलपत्थर) बता पाएँगे जो भारतीय स्थितियों के अनुकूल हो।
2. मानसिक मंदन के लिए तीन जांच सूचियों का प्रयोग कर पायेंगे।
3. परामर्श देने संबंधी कार्यविधियों का विवरण दे पायेंगे।



## तीसरा अध्याय-3

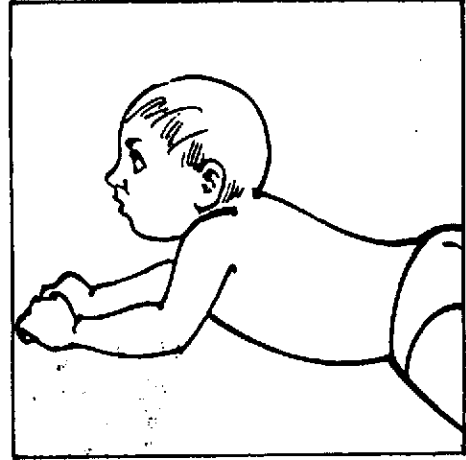
### पहचान एवं परामर्श

#### बाल विकास :

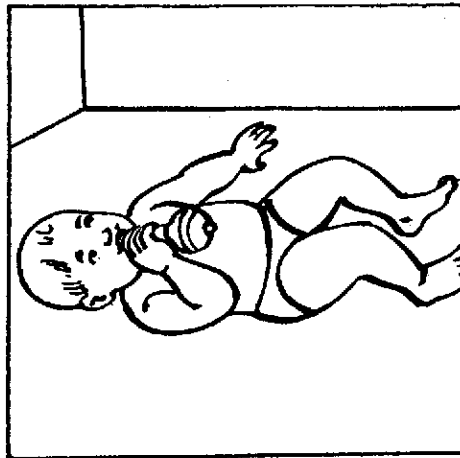
बच्चों का विकास एक रीतिबद्ध ढंग से होता है। हर बच्चा अपने जीवन में विशिष्ट समय पर कुछ अवस्थाओं से गुजरता है। ये अवस्थाएँ विकास के मीलपत्थर कहलाती हैं। विकास के मीलपत्थरों को पहचानना महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे उन बच्चों को पहचानने में मदद मिलती है जिनमें विकास होने में विलम्ब हुआ हो। विकास की कुछ सामान्य अवस्थाएँ (मीलपत्थर) और भारतीय स्थितियों में उन्हें प्राप्त करने की अनुकूल आयु नीचे दी गई है। यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि कुछ बच्चे कुछ अवस्थाओं से गुजरे बिना भी आगे बढ़ सकते हैं।



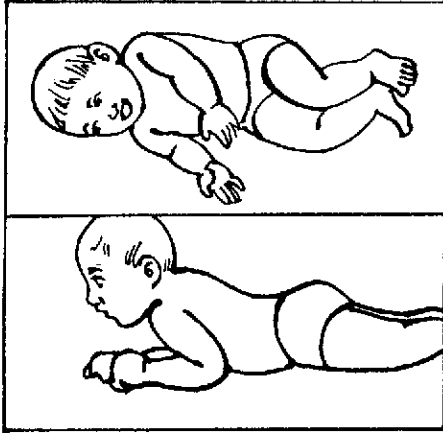
किसी को देखकर मुस्कराता है  
4 माह



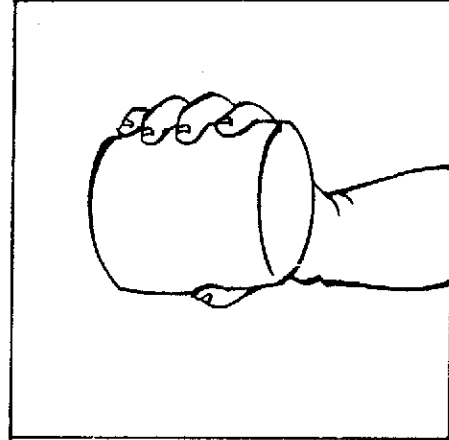
सिर को सीधा रखता है  
4 माह



चीजेँ मुँह में डोलता है  
4 माह



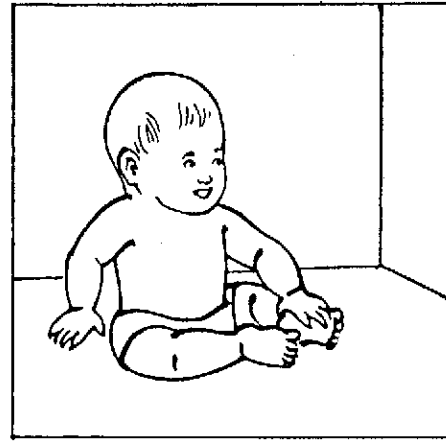
करवट लेकर पेट के बल आ जाता है ।  
6 माह



चीजें पकड़ने के लिए पूरी हथेली का  
इस्तेमाल करता 7 माह



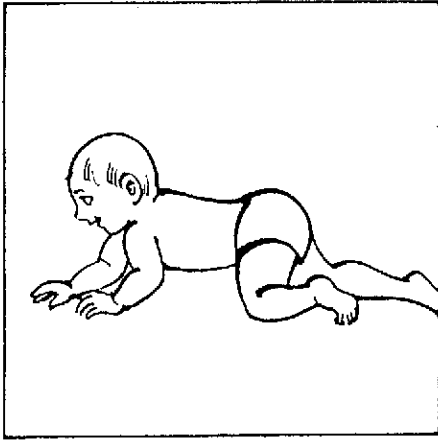
अना, अद दादा की आवजें निकालता  
7 माह



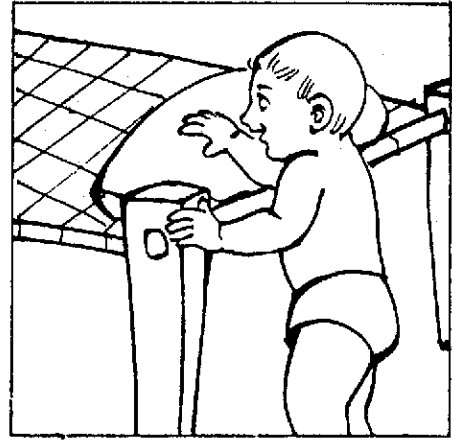
सहारे के बिना बैठता  
8 माह



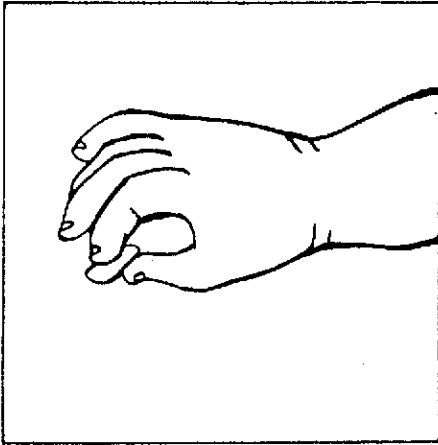
नाम से बुलाए जाने पर प्रतिक्रिया व्यक्त करता है ।  
10 माह



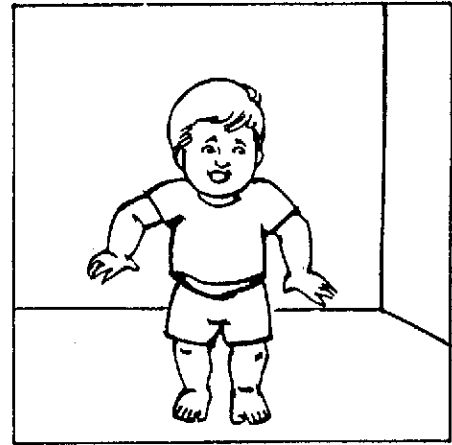
घुटनों के बल चलता है ।  
10 माह



किसी वस्तु को पकड़कर खड़ा हो जाता है ।  
10 माह



अंगूठे और तर्जनी से किसी वस्तु को  
पकड़ लेता है । 10 माह



सहारे के बिना खड़ा हो जाता है ।  
10 माह



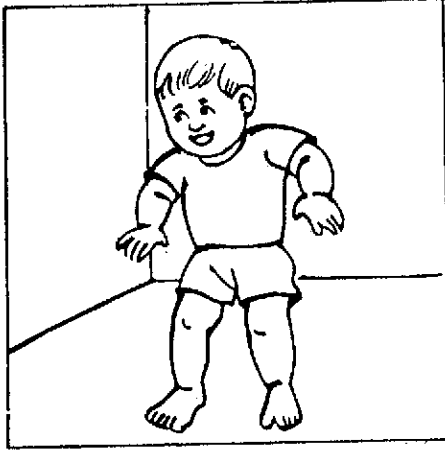
अम्मा, अक्का, अत्ता को पहचानकर उन्हें बुलाता है ।

15 माह

## विकास की सामान्य अवस्थाएं

क्रम सं.	मीलपत्थर	आयु
1.	किसी को देखकर मुस्कराता है ।	4 माह
2.	सिर को सीधा रखता है ।	4 माह
3.	चीजें मुंह में डालता है ।	4 माह
4.	करवट लेकर पेट के बल आ जाता है ।	6 माह
5.	चीजें पकड़ने के लिए पूरी हथेली का इस्तेमाल करता है ।	7 माह
6.	“अन्न” “अद दादा” की आवाजें निकालते हैं ।	7 माह
7.	सहारे के बिना बैठ जाता है ।	7 माह
8.	नाम से बुलाए जाने पर प्रतिक्रिया व्यक्त करता है ।	10 माह
9.	रेंगता है ।	10 माह
10.	किसी चीज़ को पकड़कर खड़ा हो जाता है ।	10 माह
11.	अंगूठे और तर्जनी से चीजें पकड़ता है ।	10 माह
12.	बिना सहारे के खड़ा हो जाता है ।	10 माह
13.	“अम्मा” “अब्बा” “अत्ता” को पहचान कर उन्हें बुलाता है ।	15 माह
14.	सहारे के बिना चलता है ।	15 माह
15.	अपना नाम बताता है ।	18 माह
16.	अपने आप गिलास से पीता है ।	21 माह
17.	शरीर के अंगों का नाम लिए जाने पर उन अंगों को दिखाता है ।	24 माह
18.	शौचालय जाने की आवश्यकता पड़ने पर बता देता है ।	24 माह
19.	छोटे छोटे वाक्य बोलता है ।	30 माह
20.	कपड़ों के बटन खोल लेता है ।	36 माह
21.	सरल प्रश्नों के अर्थपूर्ण मौखिक उत्तर देता है ।	36 माह
22.	बड़े और छोटे में अंतर कर लेता है ।	36 माह
23.	लड़के या लड़की की पहचान कर लेता है ।	36 माह
24.	कपड़ों के बटन बंद कर लेता है ।	40 माह
25.	बालों में कघी कर लेता है ।	48 माह

\* राष्ट्रीय मानसिक विकलांग संस्थान दल द्वारा किए गए सर्वेक्षण पर आधारित है । यह बात ध्यान में रखी जाए कि, किसी भी अवस्था को प्राप्त करने का समय दी गई औसत आयु से अलग (भिन्न) हो सकता है । पूरे ब्यौरे के लिए रा.मा.वि. संस्थान द्वारा तैयार की गई पुस्तक “मानसिक मन्दन-मनोवैज्ञानिकों के लिए एक निर्देश पुस्तिका” का परिशिष्ट देखें ।



सहारे के बिना चल लेता है ।  
15 माह



अपना नाम बताता है ।  
18 माह



अपने आप गिलास से पीता है ।



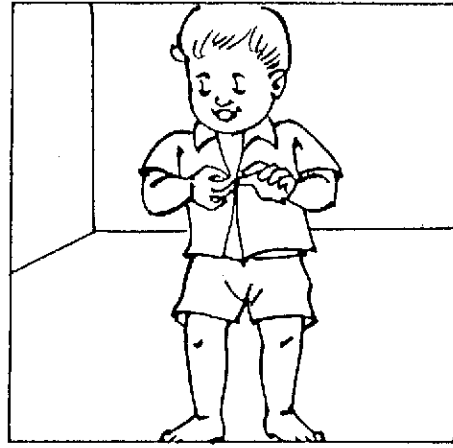
पूछने पर शरीर के अंग दिखाता है ।  
24 माह



शौचादि की आवश्यकताओं बताता है ।  
24 माह



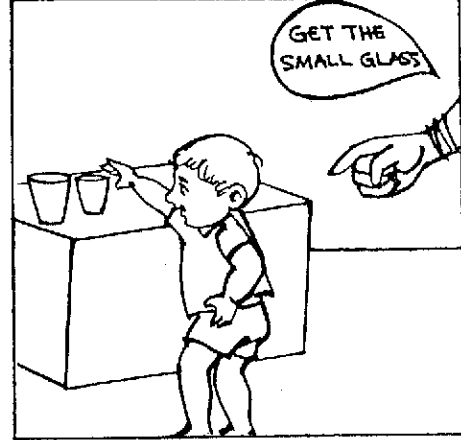
छोटे छोटे वाक्य बोलता है ।  
30 माह



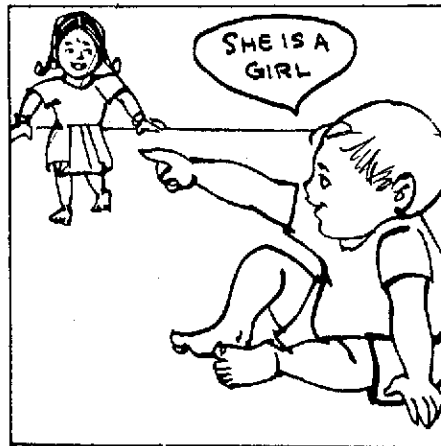
कपड़ों के बटन खोलता है ।  
36 माह



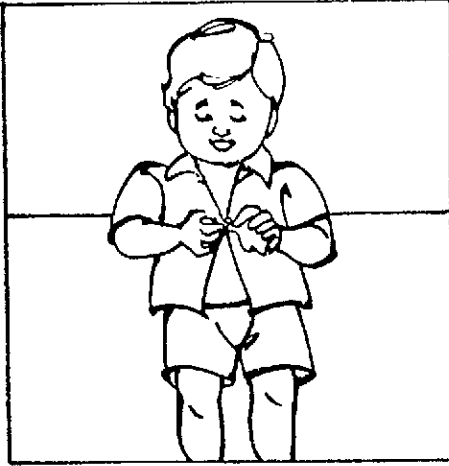
सरल प्रश्नों के अर्थपूर्ण मौखिक  
उत्तर देता है । 36 माह



छोटे और बड़े में अंतर करता है ।  
36 माह



लड़के या लड़की की पहचान कर लेता है ।  
36 माह



कपड़ों के बटन बंद कर सकता है ।  
36 माह



बालों में कधी करता है ।  
48 माह

### मानसिक मंदन व्यक्तियों की पहचान

हमने देखा कि, सामान्य बच्चे का विकास कैसे होता है । मानसिक रूप से मंद व्यक्ति का यथा समय पता यह देखकर लगाया जाता है कि विकास की अवस्था प्राप्त करने में बच्चे को कितना विलम्ब हुआ है । मानसिक मन्दन की पहचान कुछ प्रश्नावलियों या जांचसूचियों द्वारा की जाती है जिन्हें परख अनुसूचियों कहा जाता है । ऐसी तीन परख अनुसूचियाँ दी गई हैं । पहली अनुसूची 3 वर्ष से कम उम्र के बच्चों के लिए है । दूसरी 3 से 6 वर्ष तक बच्चों के लिए है । तीसरी 7 वर्ष और उससे अधिक उम्र के बच्चों के लिए है । विकास की सामान्य अवस्थाओं में, इन्हें प्राप्त करने की केवल औसत आयु दी गई है । लेकिन विकास में होने वाले विलम्ब का जांच करते समय आयु वर्ग को ध्यान में रखना होता है । अतः आयु वर्ग का उल्लेख जांच अनुसूची-1 में किया गया है ।

परख अनुसूची सं. I (तीन वर्षों से कम)

क्रम सं.	मंद	सामान्य आयु वर्ग	जिस आयु तक न प्राप्त किए जाने पर अवस्था में विलम्ब माना जाए
1.	नाम/आवाज लेकर बुलाए जाने पर प्रतिक्रिया व्यक्त करता है ।	1-3 माह	चौथा माह
2.	किसी को देखकर मुस्कुराता है ।	1-4 माह	छठा माह
3.	सिर को स्थिर रखता है ।	2-6 माह	छठा माह
4.	सहारा के बिना बैठता है ।	5-10 माह	बारहवा माह
5.	सहारे के बिना खड़ा हो जाता है ।	9-14 माह	अठारहवा माह
6.	ठीक से चलता है ।	10-20 माह	बीसवा माह
7.	2-3 शब्दों के वाक्य बोलता है ।	16-30 माह	तीसरा वर्ष
8.	अपने आप खा-पी लेता है ।	2-3 वर्ष	चौथा वर्ष
9.	अपना नाम बताता है ।	2-3 वर्ष	चौथा वर्ष
10.	शौचादि पर नियंत्रण कर सकता है ।	3-4 वर्ष	चौथा वर्ष
11.	सामान्य खतरों से दूर रहता है । अन्य कारण	3-4 वर्ष	चौथा वर्ष
12.	दौरे पडते हैं ।	हाँ	नहीं
13.	शारीरिक असमर्थता होती है ।	हाँ	नहीं

यदि बच्चे में 1 से 11 तक की क्र.सं. पर दी गई किसी भी अवस्था को प्राप्त करने में विलम्ब होता है और यदि बच्चे को दौरे पडते हैं या उसमें शारीरिक असमर्थता है तो मानसिक रूप से मंद होने का संदेह हो सकता है ।



## परख अनुसूची सं. II (3 से 6 वर्ष)

निम्नलिखित बातों पर ध्यान दें :

1. क्या बच्चे ने दूसरे बच्चों की तुलना में बैठना, खड़े होना और चलना अपेक्षाकृत अत्यधिक देर से शुरू किया ? हाँ/नहीं
  2. क्या ऐसा लगता है कि बच्चे को सुनने में कठिनाई होती है ? हाँ/नहीं
  3. क्या देखने में कठिनाई महसूस करता है ? हाँ/नहीं
  4. जब आप बच्चे से कुछ करने को कहते हैं तो क्या ऐसा लगता है कि, उसे आपकी बात समझने में परेशानी होती है ? हाँ/नहीं
  5. क्या बच्चे के अंगों में कमजोरी और/या ऐंठन है और/या उसे चलने में या बाजू हिलाने में कोई कठिनाई होती है ? हाँ/नहीं
  6. क्या बच्चे को कभी-कभी दौरे पडते हैं, वह उग्र या अचेतक हो जाता है ? हाँ/नहीं
  7. क्या बच्चे को अपनी उम्र के अन्य बच्चों की तरह काम करना सीखने में कठिनाई महसूस होती है ? हाँ/नहीं
  8. क्या बच्चा बिलकुल भी नहीं बोल सकता ? (अपनी बात शब्दों में नहीं समझा सकता / कोई स्पष्ट (सार्थक) शब्द नहीं बोल सकता) हाँ/नहीं
  9. क्या बच्चा सामान्य बच्चों की तुलना में अलग ढंग से बोलता है । इस ढंग से कि, उसकी बात उसके परिवार के नजदीकी सदस्यों के अलावा और किसी की समझ में नहीं आती ? हाँ/नहीं
  10. क्या बच्चा अपनी उम्र के अन्य बच्चों की तुलना में किसी भी तरह से पिछड़ा, उदासीन या मंद दिखाई देता है ? हाँ/नहीं
- यदि उपर्युक्त बातों में से किसी का भी उत्तर "हाँ" हो तो "मानसिक रूप से मंद" होने की संदेह करें ।
- \* विकासशील देशों में गम्भीर मानसिक मंदन के लिए परख करने के संबंध में इंटरनेशनल पायलट स्टडी ऑफ सिवियर चाइल्ड हुड डिसेबिलिटी की अंतिम रिपोर्ट से लिया गया है ।

परख अनुसूची सं. III (7 वर्ष और उससे अधिक)

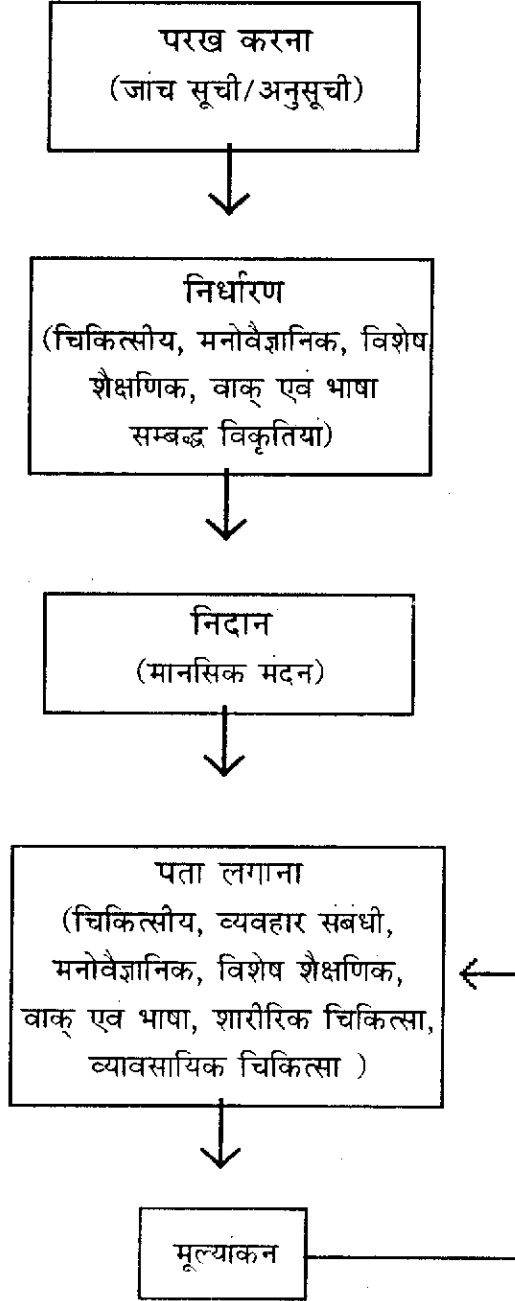
1. क्या बच्चे ने दूसरे बच्चों की तुलना में बैठना, खड़े होना और चलना अत्यधिक देर से शुरू किया ? हाँ/नहीं
2. क्या बच्चा अपने काम स्वयं नहीं कर सकता, जैसे खाना खाना कपड़े पहनना, नहाना और तैयार होना ? हाँ/नहीं
3. क्या बच्चे को आपकी बात समझने में कठिनाई होती है, जब आप उससे कहते हैं "यह करो या वह करो" ? हाँ/नहीं
4. क्या बच्चे की बोली स्पष्ट है ? हाँ/नहीं
5. क्या जब तक बच्चे से यह पूछा जाए कि उसने क्या देखा/सुना है, उसे अपने आप को अभिव्यक्त करने में कठिनाई होती है ? हाँ/नहीं
6. क्या बच्चे को कमजोरी है और/या उसके अंगों में ऐंठन है और/या उसे चलने में या अपने बाजू हिलाने में कठिनाई होती है ? हाँ/नहीं
7. क्या बच्चे को कभी कभी दौरे पड़ते हैं, वह उग्र या अचेतक हो जाता है ? हाँ/नहीं
8. क्या बच्चा अपनी उम्र के बच्चों की तुलना किए जाने पर किसी तरह से पिछड़ा हुआ, उदासीन या मंद दिखाई देता है ?

यदि उपर्युक्त बातों में से किसी का भी उत्तर "हाँ" हो तो "मानसिक रूप से मंदन" का संशय करें।

नोट : परख अनुसूची सं. II और सं. III में कई प्रश्न ऐसे हैं जिनमें अधिक जानकारी शामिल है अर्थात्, ऐसे बच्चों का पता लगाया जा सकता है जिनमें मानसिक मंदन न हो, केवल श्रवण दोष या शारीरिक विकलांगता या मिरगी हो। इन दो परख अनुसूचियों से प्रत्येक मानसिक रूप से मंद बच्चे की शीघ्र पहचान सुनिश्चित रूप से की जा सकती है। यदि इन प्रश्नों से मानसिक मंदन के अलावा अन्य किसी रूप से विकलांग व्यक्तियों की पहचान हो जाती है तो चिन्ता न करें। ऐसे व्यक्तियों का निर्धारण बाद में किया जा सकता है। हमारा प्रमुख उद्देश्य मानसिक रूप से मंद बच्चों की पहचान करना है।

## फ्लो चार्ट :

पहचान एवं प्रबंधन



## परामर्श :

एक बार मानसिक मंदन का संशय होने पर मानसिक मंदन का निदान किसी ऐसे व्यक्ति द्वारा किया जाना चाहिए जो इस विषय पर्याप्त रूप से प्रशिक्षित हो । जिन स्थानों पर ऐसे निदान किए जा सकते हैं, वे इस प्रकार हैं - सामान्य अस्पतालों के बाल चिकित्सा/मनोरोग विज्ञान विभाग, मानसिक अस्पताल, मानसिक रूप से मंद व्यक्तियों के लिए बाल निर्देशन क्लिनिक और विशेष स्कूल । इनके अलावा जिला पुनः स्थापन केन्द्र में कार्यरत मनोवैज्ञानिक/व्यावसायिक काउंसलर रोग निदान कर सकता है । निदान को अंतिम रूप दिए जाने से पहले माता-पिता से निम्नलिखित जानकारी प्राप्त करनी पड़ती है - गर्भावस्था के दौरान माँ के स्वास्थ्य का विस्तृत विवरण, बच्चे के जन्म के स्वरूप और प्रकार संबंधी विवरण और जन्म के समय होने वाली परेशानियाँ, यदि कोई हुई हो तो, जन्म के बाद बच्चे के स्वास्थ्य से संबंधित ब्यौरे जैसे प्रतिरक्षण (टीकाकरण) और उसे हुई बीमारियाँ जैसे बुखार, दौरे, पीलिया और खसरा, और परिवार के अन्य सदस्यों के संबंध में इसी प्रकार की बीमारियों के ब्यौरे । ब्यौरे प्राप्त करने के बाद विकासात्मक निर्धारण किया जाता है और यदि आवश्यक हो तो, बुद्धि परीक्षण किए जाते हैं । बच्चे के कार्य करने के वर्तमान स्तर का पता लगाने के लिए निर्धारण जांच सूची पर उसका निर्धारण किया जाता है । बच्चोंकी जांच डॉक्टर द्वारा यह जानने के लिए की जाती है कि, उसमें कोई चिकित्सापरक समस्याएँ तो नहीं हैं जैसे दौरे पडना । यदि आवश्यक हो तो कुछ दवाइयाँलिख दी जाती हैं उसके बाद बच्चे के प्रबन्धन (देखभाल) की योजना तैयार की जाती है ।

मानसिक रूप से मंद बच्चे के प्रबन्धन (देखभाल) की योजना बच्चे के वर्तमान स्तर के अनुसार और मिरगी, अतिगतिशीलता, व्यवहार सम्बन्धी समस्याओं और अन्य संवेदी असमर्थताये जैसे अन्य सम्बद्ध स्थितियों के अनुसार बनायी जाती है। ऐसी व्यवस्था मेशिशुओं का उद्दीपन, रोजमर्रा की जिन्दगी के लिए जरूरी कौशलों में और व्यवसाय-पूर्व प्रकार्यात्मक शिक्षा और व्यावसायिक कौशलों में प्रशिक्षण देना शामिल है। इसके अलावा बच्चे को बोलने, चलने, समस्या व्यवहार के इलाज और चिकित्सापरक समस्याओं के इलाज में सहायता की आवश्यकता होती है। मानसिक रूप से मंद व्यक्तियों के प्रबन्धन संबंधी ब्यौरे अगले अध्यायों में दिए गए हैं। इस निर्देश पुस्तिका में प्रबन्धन संबंधी पहलू माता-पिता को परामर्श एवं निर्देश देने, समाज में मानसिक मंदन के प्रति जागरूकता पैदा करने, व्यावसायिक प्रशिक्षण देने और नौकरी दिलाने तक सीमित है। बौद्धिक निर्धारण, कौशल प्रशिक्षण और व्यवहार सुधार संबंधी विवरणों के लिए "मानसिक मंदन-मनोवैज्ञानिकों के लिए निर्देश पुस्तिका" देखें।

### सारांश

1. विकास के 25 सामान्य मीलपत्थर (अवस्थाएं) दिए गए हैं। ये अवस्थाएं भारतीय स्थिति के अनुरूप हैं और रा.मा.वि.सं. दल द्वारा किए गए सर्वेक्षण पर आधारित हैं।
2. 0-3 वर्ष, 3-6 वर्ष और 7 वर्ष और अधिक के आयु वर्ग के लिए तीन परख अनुसूचियाँ दी गई हैं। परख कर लेने के बाद विस्तृत निर्धारण करना पड़ता है।
3. संश्लिष्ट मामलों में परामर्श किए जाने के लिए विभिन्न स्थानों का उल्लेख किया गया है।

### स्वमूल्यांकन - III

1. निम्नलिखित के जोड़ लगाइये :-

- |   |           |     |
|---|-----------|-----|
| 1. गर्दन सम्भालना                             | क. 8 माह  | ( ) |
| 2. बिना सहारे के बैठना                        | ख. 24 माह | ( ) |
| 3. बिना सहारे के खड़े होना                    | ग. 4 माह  | ( ) |
| 4. शौचालय जाने की आवश्यकता होने पर बताता है । | घ. 10 माह | ( ) |

2. मानसिक मन्दन के किन्हीं तीन संकेतों के नाम बताएं

क. -----

ख. -----

ग. -----

3. निम्नलिखित के जोड़े लगाइये :-

- |                           |           |     |
|---------------------------|-----------|-----|
| 1. स्वच्छन्द मुस्कान      | क. 6 माह  | ( ) |
| 2. गिलास में अपने आप पीना | ख. 4 माह  | ( ) |
| 3. लुढ़कना                | ग. 15 माह | ( ) |
| 4. बिना चलना सहारे के     | घ. 21 माह | ( ) |

4. निम्नलिखित चरणों को क्रम में रखें

- |  |     |
|--|-----|
| 1. पता लगाना                                   | ( ) |
| 2. निदान                                       | ( ) |
| 3. मानसिक मदन की परख करना                      | ( ) |
| 4. कार्य करने के वर्तमान स्तर का निर्धारण करना | ( ) |
| 5. मनोवैज्ञानिक परीक्षण                        | ( ) |

6. आपके पास आठ माह का एक लड़का लाया जाता है जो अपना सिर नहीं सम्भाल सकता, कर वट नहीं ले सकता और माता पिता को टकटकी लगाकर नहीं देख सकता । भूखा होने पर वह रोता है । माँ बच्चे को समय-समय पर दूध देती है । जंग्र करने पर बच्चा लौटा हुआ पाया जाता है, वह किसी उद्दीपन के प्रति कोई प्रतिक्रिया नहीं दिखाता । बच्चे की जंग्र करने वाले डॉक्टर ने यह

रिपोर्ट दी है कि नैदानिक दृष्टि से बच्चे के सभी तंत्र सामान्य हैं । इसके बाद आप क्या करेंगे और बच्चे के माता-पिता को क्या सलाह देंगे ।

6. आपके पास एक दस वर्ष का बच्चा लाया जाता है जिसकी पढ़ने लिखने में रुचि नहीं है और बहुत जिद्दी है वह पांचवी कक्षा में पढ़ रहा है । उसके माता-पिता का कहना है कि पिछले एक वर्ष से कक्षा परीक्षाओं में उसके बहुत कम अंक, प्राप्त हो रहे हैं । वह स्कूल में अन्य छात्रों के साथ झगड़ता रहता है । खेलों में उसकी रुचि है और हर समय खेलता रहता है । डॉक्टर की रिपोर्ट के अनुसार बच्चा शारीरिक रूप से स्वस्थ है । इस मामले में आप आगे क्या कार्रवाई करेंगे ।
7. आपके पास छः साल की एक लड़की लाई जाती है जो ठीक से बोल नहीं सकती, उसे चलने में कठिनाई महसूस होती है, माह में एक बार दौरा पड़ता है और वह ठीक से अपने दंत साफ नहीं कर सकती, ठीक से नहा नहीं सकती और ठीक से कपड़े नहीं पहन सकती । विस्तार से पूछताछ करने पर मालूम होता है कि उस बच्चा का जन्म दीर्घ प्रसव के बाद हुआ था और उसने विकास की सभी अवस्थाएं देर से प्राप्त कीं । डॉक्टर ने उसे दौरे पड़ने की दवा लिख दी है और भौतिक चिकित्सक उसे परकृत तनन (स्ट्रेचिंग) व्यायाम करवा रहा है क्योंकि उसके अंगों में ऐंठन देखी गई थी । इस मामले में आप आगे क्या कार्रवाई करेंगे ।

## चौथा अध्याय - 4

प्रबंधन (देखभाल करना)

उद्देश्य :

यह अध्याय पूरा करने के बाद निर्देशन काउंसलर निम्नलिखित कार्य कर सकेगा :

1. अच्छे काउंसलर के गुण बताना ।
2. मानसिक मन्दन में उपबोधन काउंसलिंग के लक्ष्य समझना (पहचानना)
3. मानसिक मन्दन के विषय में आम गलत धारणाओं को दूर करना ।
4. मानसिक मन्दन पर समाज में जागरूकता पैदा करने के तरीके बताना ।
5. मानसिक रूप से मंद व्यक्तियों के कल्याण के लिए कार्यों की सूची बनाना ।

## चौथा अध्याय-4 प्रबंधन (देखभाल करना)

मानसिक रूप से मंद व्यक्ति की पहचान कर लेने के बाद यह आवश्यक है कि उसका पूरी तरह अभिनिर्धारण किया जाए ताकि प्रबंधन (देखभाल करने संबंधी) योजना का निरूपण किया जा सके। सामान्यतः किसी मानसिक रूप से मंद व्यक्ति का अभिनिर्धारण और प्रबंधन चिकित्सकों दल द्वारा किया जाता है जिसमें या तो कोई मनोरोगविज्ञानी होता है या फिर एक बाल रोग विशेषज्ञ, एक मनोविज्ञानी और एक शिक्षक। वाक्-विकृतिविज्ञानी, भौतिक चिकित्सक, व्यवसायी चिकित्सक और एक व्यावसायिक निर्देशन काउंसलर इसके अन्य सदस्य हो सकते हैं। विभिन्न पहलुओं, जैसे सामान्य पृष्ठभूमि सम्बन्धी जानकारी, चिकित्सा दशा, बौद्धिकता, रोजमर्रा की जिन्दगी में कार्य करने का मौजूदा स्तर, सामाजिक प्रतिस्पर्धा और सम्बन्धित समस्याओं, का सम्पूर्ण निर्धारण करने के बाद मानसिक रूप से मंद बच्चे के लिए प्रबंधन योजना तैयार की जाती है। इसके लिए यथास्थिति विशेष स्कूलों से परामर्श लिया जा सकता है। यदि सम्भव हो तो, या घर पर रहकर प्रशिक्षण दिया जा सकता है। या व्यावसायिक प्रशिक्षण दिया जा सकता है। प्रशिक्षण कार्यक्रम आरम्भ करने से पहले, सबसे महत्वपूर्ण विचारणीय बात यह है कि बच्चे के माता-पिता को उसकी स्थिति बताई जाए और उन्हें ईमानदारी से यह बता दिया जाए कि क्या किया जा सकता है।

### माता-पिता को परामर्श देना

सभी माता-पिता एक स्वस्थ और सामान्य संतान की चाह करते हैं। लेकिन अशक्त संतान पैदा होने पर उनकी सभी आशाओं पर पानी फिर जाता है। इसके लिए आजीवन समायोजन की आवश्यकता होती है। इस परिस्थिति से प्रभावकारी ढंग से निपटने में माता पिता की सहायता करने के लिए उन्हें परामर्श देना सम्पूर्ण, पबन्धन योजना के एक अंश के रूप में अनिवार्य है। परामर्श देने का उद्देश्य माता-पिता को अपने बच्चे की समस्या समझने और उन्हें स्वीकार करने में मदद करना है। इससे उन्हें मानसिक रूप से मंद व्यक्ति की क्षमता के अनुरूप उपयुक्त योजना बनाने में भी मदद मिलती है। एक प्रभावशाली काउंसलर होने के लिए व्यक्ति में कुछ कौशल और विशेषताएँ होना आवश्यक है। ये इस प्रकार हैं :

**सत्यनिष्ठा :** किसी सफल काउंसलर का आधारभूत गुण है वह सत्यनिष्ठा जिससे वह रोगी की सहायता करना चाहता है। इससे रोगी में आस्था और विश्वास पैदा होता है। ऐसा होने पर माता-पिता काउंसलर को अपनी वे सब समस्याएँ बेझिंक बता देंगे जिनका सामना उन्हें अपने मानसिक रूप से मंद बच्चे के साथ करना पड़ता है। यह अत्यंत आवश्यक है कि काउंसलर को चाहिए कि वह रोगी के विषय में जानकारी और उसके परिवार की स्थितियों को गोपनीय रखे।

**पुनः आश्वासन** माता-पिता को यह अनुभव कराना अनिवार्य है कि काउंसलर उन्हें और उन समस्याओं को जिनका वे सामना कर रहे हैं समझता है। काउंसलर को चाहिए कि वह माता-पिता की हर बात धैर्यपूर्वक सुने, भले ही उसे वह जानकारी महत्वपूर्ण न लगे। साथ ही उसे यह भी ध्यान रखना चाहिए कि वह माता-पिता को झूठी आशाएँ न दिलाए। एक प्रभावशाली काउंसलर के लिए ऐसा कर पाना सम्भव है कि रोगी काउंसलर में आस्था रखे और उससे पुनः आश्वस्त रहे।



## - प्रभावकारी संप्रेषण :

परामर्श देते समय तकनीकी भाषा का प्रयोग न करते हुए सरल भाषा का प्रयोग किया जाना चाहिए माता-पिता को जो बताया जा रहा हो, यदि वे उसे न समझ पाएँ तो उन्हें परामर्श देने का उद्देश्य ही विफल हो जाता है। बच्चे की हालत में और उपलब्ध सुविधाओं के संबंध में माता-पिता को ईमानदारी से स्पष्ट जानकारी दी जानी चाहिए लेकिन प्रबंधन (देखभाल) के सम्बन्ध में अंतिम निर्णय का चुनाव माता-पिता पर छोड़ दिया जाना चाहिए।

## - भावनात्मक स्थिरता

जब माता-पिता यह जान जाते हैं कि उनका बच्चा सामान्य नहीं हो सकता तो वे कुठित हो सकते हैं। हो सकता है कि वे अंदर से टूट जाएँ या फिर वे काउंसलर से दुर्व्यवहार करने लगें। काउंसलर को चाहिए कि वह अपना भावनात्मक संतुलन बनाए रखे और माता-पिता की ऐसी भावनाओं पर प्रतिकूल प्रतिक्रिया न दिखायें।

काउंसलर को यह समझना चाहिए कि माता-पिता उससे परेशान नहीं हैं बल्कि उस स्थिति से परेशान हैं जिससे जूझ रहे हैं और उनका व्यवहार अपनी समस्या के प्रति सजग होने के कारण मात्र भावनाओं का आवेग है। इसके विपरीत, काउंसलर को चाहिए कि वह माता-पिता को उस चिन्ता और कुण्ठों से मुक्त करे जिससे वे लम्बे समय से जूझ रहे हैं।

परामर्श देने में किस बात पर अधिक बल दिया जाए मानसिक रूप से मंद बच्चे और उसके परिवार की व्यक्तिगत आवश्यकताओं पर निर्भर करता है। मानसिक रूप से मंद बच्चे के माता-पिता को परामर्श देने की निम्नलिखित अवस्थाएँ हैं :

### पहली अवस्था

मानसिक रूप से मंद बच्चे की दशा के बारे में जानकारी देना

- बच्चे की वास्तविक दशा माता-पिता को सरल शब्दों में समझा दी जानी चाहिए।
- परामर्श में पर्याप्त समय लगाया जाना चाहिए।
- माता-पिता को किसी भ्रम में नहीं रखना चाहिए, गलत जानकारी नहीं देनी चाहिए, न ही उन्हें झूठी आशाएँ बंधानी चाहिए। मानसिक मंदन से संबंधित अन्य दशाओं, जैसे दौरे पड़ना अतिक्रिया या अन्य किसी प्रकार की विकलांगता के इलाज के लिए व्यावसायिक मदद से संबंधित जानकारी माता-पिता को दी जानी चाहिए।

### दूसरी अवस्था

माता-पिता की इस बात में मदद करें कि वे अपने विकलांग बच्चों के प्रति सही दृष्टिकोण विकसित करें।

- कई बार माता-पिता अपने बच्चे की अशक्तता की स्थिति के कारणों और उनके प्रबंधन (देखभाल) के सम्बन्ध में गलत धारणाएँ, रूख और कल्पनाएँ अपना लेते हैं। ऐसा विशेषकर उस स्थिति में होता है जब बच्चा दिखाई तो सामान्य देता है किन्तु फिर भी असामान्य ढंग से कार्य करता है। जानकारी की कमी के कारण माता-पिता यह सोच लेते हैं कि धीरे-धीरे बच्चा सामान्य हो जाएगा। यदि वे समस्या के प्रति सजग भी हैं, तो कुछ माता-पिता इसके कारणों के संबंध में अज्ञानता के कारण एक-दूसरे को ऐसे बच्चे के जन्म

के दोषी ठहराते हैं। कुछ माता-पिता चिकित्साओं शल्य-चिकित्सा का सहारा लेते हैं या फिर आस्था-चिकित्सा के जरिए चमत्कारिक चिकित्सा का। कुछ यह भी सोच लेते हैं कि ऐसे बच्चे के लिए कुछ किया ही नहीं जा सकता।

- काउंसलर को चाहिए कि वह मानसिक रूप से मंद व्यक्ति की मंदन के स्वरूप, कारणों और, प्रबन्धन के विषय में सही सही जानकारी दे। उसे अन्य मंद व्यक्तियों के आहरण और उनका प्रबन्धन कैसे किया जाता है, बताना चाहिए।
- कुछ माता-पिता अपने मानसिक रूप से मंद बच्चों के प्रति गलत रूख अपना लेते हैं। ऐसा अति-संरक्षण या अस्वीकरण के कारण होता है।

अतिसंरक्षण का रूख, जैसे बच्चे को किसी भी चुनौतीपूर्ण स्थिति से बचाकर रखना और/या बच्चा कोई कार्य करने के लिए पूरी तरह प्रयास करे इससे पहले ही उसके लिए लगभग सब कुछ कर देना, इस रूख को बदला जाना चाहिए क्योंकि इस बच्चे में जो थोड़ी बहुत क्षमता होती है उसका भी विकास रूख जाता है।

- अस्वीकरण का रूख - अर्थात् यह सोचना कि बच्चा कुछ नहीं कर सकता और उसकी उपेक्षा करना, यह रूख भी बदला जाना चाहिए ताकि व्यवस्थात्मक प्रशिक्षण से कुछ सीखने में बच्चे की मदद की जा सके।
- कुछ माता-पिता अपने बच्चे पर बहुत अधिक जोर डालते हैं और बच्चे की क्षमताओं से परे उसके कुछ सीखने या पा लेने की आशा करते हैं। इससे मानसिक रूप से मंद बच्चों में कुंठा और असफलता की भावना पनपने लगती है। माता-पिता को इस बात की जानकारी दी जानी चाहिए कि वे अपने बच्चों से क्या अपेक्षा करें।
- कुछ माता-पिता इस बात के लिए आत्मग्लानि महसूस करते हैं कि बच्चे की उस स्थिति के लिए वे स्वयं जिम्मेदार हैं। माता-पिता को यह समझाया जाना चाहिए कि मानसिक मन्दन सामान्यतः ऐसे कारणों से होती है जिनपर उनका कोई प्रत्यक्ष नियंत्रण नहीं होता।

### तीसरी अवस्था

माता-पिता में यह जागरूकता पैदा करें कि उनके मानसिक रूप से मंद बच्चे के प्रशिक्षण में उनकी भूमिका क्या है।

- एक बार परामर्श के लिए बच्चे को लाए जाने के बाद, माता-पिता यह सोच लेते हैं कि उनके बच्चों के प्रबन्धन की जिम्मेदारी मानसिक रूप से मंद व्यक्तियों के लिए काम कर रहे लोगों द्वारा उठा ली जाएगी। काउंसलर को चाहिए कि वह माता-पिता और परिवार के अन्य सदस्यों को मानसिक रूप से मंद बच्चे के प्रशिक्षण में उनकी भूमिका और उसकी प्रभावकारिता के बारे में समझाए।
- कुछ माता-पिता यह समझते हैं कि मानसिक रूप से मंद बच्चों को प्रशिक्षित करने के लिए विशिष्ट कौशल की आवश्यकता होती है और वे अपने बच्चे को प्रशिक्षित नहीं कर पाएंगे। माता-पिता को इस बात की जानकारी दी जानी चाहिए कि मानसिक रूप से मंद बच्चे के प्रशिक्षण के लिए किसी विशिष्ट कौशल की आवश्यकता नहीं है और मानसिक रूप से मंद बच्चा सरल क्रम में बार-बार प्रशिक्षण दिए जाने पर सीख सकता है।

- ऐसे मानसिक मंद बच्चों के माता-पिता जिनकी सहायता पहले से ही की जा रही है और ऐसे माता-पिता जिनके मानसिक बच्चों के मंद होने की पहचान हाल ही में की गई हो, उन्हें आपस में मिलवा देना सहायक सिद्ध होगा। इससे उन्हें एक दूसरे की सहायता करने के अवसर भी मिलेंगे।
- माता-पिता को इस बात में मदद की जानी चाहिए कि वे प्रशिक्षण के कौशल प्रदर्शन द्वारा और देखदेख कर सीखें।
- माता-पिता को यह दिखाया जाना चाहिए कि किस तरह उनके द्वारा दिए गए प्रशिक्षण से उनके बच्चे ने कुछ कौशल प्राप्त किए हैं। इससे माता-पिता में सफलता की भावना पैदा होगी और वे मानसिक रूप से मंद बच्चे के प्रशिक्षण में और अधिक रूचि लेंगे।

### माता - पिता द्वारा पूछे जाने वाले कुछ प्रश्न

किसी व्यक्ति द्वारा किसी दशा के सम्बन्ध से लिए गए गलत विचार भ्रान्तियां कहलाते हैं। मानसिक मंदन के सम्बन्ध में माता - पिता या जन सामान्य में ऐसी भ्रान्तियां पाई जा सकती हैं।

माता - पिता द्वारा अपने मानसिक रूप से मंदन बच्चे की समस्याओं के प्रबंधन के लिए किए गए उपाय इस दिसा के संबंध में उनके द्वारा अपनाए गए विचारों पर निर्भर करेंगे। मानसिक रूप से मंदन बच्चों को प्रशिक्षित करने में माता - पिता से मिलने वाला सहयोग इस पर निर्भर करता है कि माता - पिता को मानसिक मंदन के बारे में सही जानकारी कितनी है।

नीचे दिए गए प्रश्नोत्तर आपको इस बात में मदद करेंगे कि आप के माता - पिता को यह बता सके कि, मानसिक मंदन वस्तुतः है क्या ?

1. क्या मानसिक मंदन और मानसिक बीमारी एक ही बात है ? नहीं। मानसिक रूप से मंदन व्यक्ति केवल विकास में धीमे होते हैं। अतः वे समझने में मूढ़ और धीमे होते हैं और रोजमर्रा की जिंदगी के लिए जरूरी विभिन्न कौशल सीखने में उन्हें कठिनाई होती है। अक्सर उन्हें वाक् संबंधी समस्या भी होती है। इनमें से कुछ को पांचवी कक्षा तक शिक्षित किया जा सकता है जबकि, अन्य इस स्तर तक भी नहीं पहुँच पाते।

दूसरी ओर मानसिक रूप से बीमार व्यक्तियों का विकास सामान्य रूप से होता है। मानसिक बीमारी किसी भी आयु में हो सकती है और उच्च शिक्षा प्राप्त लोगों में भी पाई जाती है। मानसिक बीमारी के धीरे धीरे ठीक किया जा सकता है।

2. क्या मानसिक मंदन का इलाज सम्भव है ?

नहीं। मानसिक मंदन एक ऐसी दशा है जिसका इलाज नहीं किया जा सकता। किन्तु समय पर और उचित ध्यान देकर मानसिक रूप से मंदन व्यक्ति को कुछ कौशल सिखाए जा सकते हैं।

3. क्या विवाह कर देना मानसिक मंदन का हल है ?

नहीं। कई लोग सोचते हैं कि विवाह के बाद मानसिक मंदन व्यक्ति सक्रिय और जिम्मेदार हो जाएगा या यौन संबंधों में होने वाली संतुष्टि उसे ठीक कर देगी। ऐसा नहीं है। विवाह से समस्याएँ और जटिल ही हो जाएंगी। जब

यह बात मानी हुई है कि मानसिक रूप से मंदन व्यक्ति पूरी तरह आत्मनिर्भर नहीं हो सकता, तो उसके लिए यह भी संभव नहीं होगा कि, वह अपने परिवार की देखभाल कर सके ।

4. क्या मानसिक मंदन व्यक्ति उम्र बढ़ने के साथ सामान्य हो जाते हैं ।

नहीं । मानसिक रूप से मंदन व्यक्ति का विकास सामान्य व्यक्ति की तुलना में धीमा होता है । अतः जब समय के साथ साथ उनकी वास्तविक आयु बढ़ती है तो मानसिक विकास उसी स्तर तक नहीं होता कि वह वास्तविक आयु के स्तर तक पहुंच जाए । मानसिक रूप से मंदन व्यक्ति उम्र बढ़ने के साथ साथ सामान्य तो नहीं हो सकते किन्तु गहन प्रशिक्षण से उनमें कुछ हद तक सुधार किया जा सकता है । आरम्भिक अवस्था में प्रशिक्षण अत्यंत महत्वपूर्ण है ।

5. क्या मानसिक मंदन एक संक्रामक रोग है ?

नहीं । कई लोग सोचते हैं कि यदि बच्चों को मानसिक रूप से मंद बच्चों के साथ उठने - बैठने, खाने या खेलने दिया जाए तो वे भी मानसिक रूप से मंदन हो जाते हैं । यह गलत है । इसके विपरीत मानसिक रूप से मंदन बच्चों में सुधार लाने में मदद मिलती है । इससे सामान्य बच्चे भी मानसिक रूप से मंद बच्चों की समस्याओं को समझेंगे और उन्हें स्वीकार कर लेंगे ।

6. क्या यह सच है कि मानसिक रूप से मंद बच्चों को कुछ सिखाया जा सकता ?

नहीं । मानसिक रूप से मंद बच्चों को कई चीजे सिखाई जा सकती है । वे अपनी देखभाल खुद करना सीख सकते हैं, कई कार्य कर सकते हैं जैसे पौधों में पानी देना, बीज बोना, पशुओं की देख-रेख करना, फर्श पर पोछा लगाना, बर्तन साफ करना और भार उठाना/मानसिक रूप से मंद व्यक्तियों क्रमबद्ध तरीके प्रशिक्षित करना पडता है । किसी की देखरेख में ये लोग कई काम कर सकते हैं ।

7. क्या यह सच है कि मानसिक मंदन कर्म के कारण होती है अतः इसके लिए कुछ नहीं किया जा सकता ?

नहीं । वह मानने से कि मानसिक मंदन कर्मों के कारण होती है माता - पिता आत्मग्लानि की भावना से मुक्त है । किन्तु ऐसा विश्वास रखना और बच्चे को प्रशिक्षण देने के लिए कोई प्रयास न करना और बच्चे को भाग्य के सहारे छोड़ देना गलत है । माता - पिता को यह बताया जाना चाहिए कि मानसिक मंदन का कारण चाहे जो भी हो, बच्चे को प्रशिक्षण दिलाने से उसमें सुधार होगा । यह प्रशिक्षण जितनी जल्दी शुरू कर दिया जाए, बच्चे में सुधार की सम्भावना अधिक होती है । माता-पिता का निर्देशन एवं परामर्श देना मानसिक रूप से मंदन व्यक्तियों के प्रबंधन का एक महत्वपूर्ण पहलू है । माता - पिता को समाज के लोगों की सहायता दिलाने में मदद करने और समाज को मानसिक रूप से मंदन व्यक्तियों के पुनः स्थापन कार्यक्रमों में हिस्सा लेने के लिए तैयार करने के लिए जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए । समाज में मानसिक मंदन के बारे में सजगता लाना मानसिक रूप से मंदन व्यक्तियों की सम्पूर्ण देखभाल का एक महत्वपूर्ण पहलू है । वस्तुतः समाज आधारित पुनः स्थापन सेवा संगठन में मानसिक मंदन की दशा के बारे में सजगता लाना आरम्भिक कदम है । मानसिक मंदन के प्रति समाज की जागरूकता के पहलू नीचे दिए गए हैं, साथ ही गत समय में इस के प्रति जागरूकता भी मिलनी चाहिये इसका परिचय दिया गया है ।

#### सामाजिक जागरूकता

शताब्दियों तक समाज में मानसिक रूप से मंदन व्यक्तियों की उपेक्षा की जाती रही, उनकी हंसी उड़ाई जाती

रही, उनकी अवहेलना, या तिरस्कार किया जाता रहा या फिर उन्हें सताया जाता रहा। किसी किसी समाज में या तो उन्हें बर्दाश्त किया जाता या कहीं कहीं उनका आदर भी किया जाता था। किसी किसी समाज में मानसिक रूप से मंदन व्यक्तियों को अमानवीय माना जाता था।

मध्य युग में, उन्हें शाही दरबारों में रखा जाता था जहां उन्हें मूर्खों या दरबार के विदूषकों के रूप में उनकी प्रशंसा की जाती थी। फ्रांस में उन्हें "ईस्वार की संतान" कहा जाता था और पूज्य माना जाता था। अमरीकी भारतियों में भी यही दृष्टिकोण पाया जाता था। जर्मन आस्तिकों के मत यह कि इन लोगों में शैतान का वास था। अज्ञान या अंधविश्वास के अनुसार उस समय मानसिक रूप से मंदन व्यक्तियों से भले ही सम्मान पूर्वक व्यवहार किया जाता था या फिर क्रूरता से, किन्तु उन्हें हमेशा अन्य लोगों से अलग माना जाता था।

इंग्लैंड के राजा एडवर्ड (1325) के समय में मानसिक रूप से मंदन व्यक्तियों की देखभाल करने के लिए कुछ प्रयास किए गए थे लेकिन ये प्रयास लम्बे समय तक जारी न रह सके। सतरहवीं शताब्दी में संपूर्ण इंग्लैंड (ग्रेट ब्रिटेन) में मानसिक रूप से मंद, वृद्ध, अनाथ और मानसिक रूप से बीमार लोगों की जरूरतें पूरी करने के लिए "कामधर" (वर्कहाउस) स्थापित किए गए थे। लेकिन दूसरे विश्व युद्ध के बाद इन अशक्त व्यक्तियों के प्रति समाज की उदासीनता कम हो गई। वर्ष 1848 में एडवर्ड सेग्वीन ने अपने इस दर्शन का प्रचार किया कि शिक्षा सबका समानाधिकार है और समाज के सभी व्यक्ति, जिसमें मानसिक रूप से मंद व्यक्ति भी शामिल है बेहतर जीवन के हकदार हैं। वस्तुतः मानसिक रूप से मंद व्यक्तियों की सफलता या असफलता इस बात पर निर्भर करती है कि समाज में उन्हें स्वीकार किया जाता है या अस्वीकार।

आज, इस शताब्दी में भी लोग "मानसिक मंदन" शब्द का सही सही अर्थ नहीं समझते। यह मानसिक रूप से मंद व्यक्तियों से संबंधित व्यावसायिकों का और विशेषकर व्यावसायिक निर्देशन काउंसलरों का कर्तव्य है कि वे समाज को मानसिक मंदन की दशा और मानसिक मंद व्यक्तियों की जरूरतें समझाएं। समाज को इस बात के प्रति सजग बनाया जाना चाहिए कि मानसिक रूप से मंद व्यक्तियों की पहचान किए जाने की और उन्हें यथासम्भव आत्मनिर्भर बनाने और समाज का अंग बनाने के लिए उनकी अधिकतम देखभाल किए जाने की अत्यधिक आवश्यकता है।

समाज में मानसिक मंदन के प्रति बड़े पैमाने पर सजगता लाई जानी चाहिए। समाज के हर व्यक्ति को इस बात की जानकारी दी जानी चाहिए कि वह मानसिक रूप से मंद व्यक्तियों के साथ किस तरह का व्यवहार करे और मानसिक रूप से मंद व्यक्ति को समाज का अभिन्न अंग बनाने हेतु किस तरह वह अपने व्यवहार और रूख में परिवर्तन लाए।

इस सजगता के लिए आवश्यक है कि समाज के सभी लोगों के दिमाग में ऐसी छाप बना दी जाए कि वे मानसिक रूप से मंद व्यक्तियों के बारे में अपने अंतरविरोधों, भ्रांतियों, अंधविश्वासों का त्याग कर दें।

व्यावसायिक निर्देशन काउंसलर या मानसिक रूप से मंद व्यक्तियों के लिए काम करने वाले अन्य व्यवसायिकों को चाहिए कि वे समाज में ऐसी जागरूकता लाने के लिए सम्प्रेषण के विभिन्न तरीकों पर विचार करें।

यह जानकारी पोस्टर के रूप में स्पष्ट चित्रों के माध्यम से शिक्षित व अशिक्षित जनता तक पहुंचाई जा सकती है। इन पोस्टरों में मानसिक मंदन से सम्बंधित जानकारी के सभी महत्वपूर्ण पहलुओं को शामिल किया जाना चाहिए।

जन सामान्य तक यह जानकारी रेडियो, टेलीविजन और छोटी छोटी फिल्मों के जरिए पहुंचाई जा सकती है। ग्रामीण क्षेत्रों में जानकारी देने के लिए रेडियो सर्वोत्तम माध्यम है क्योंकि, यह संचार का सबसे सस्ता और सर्वाधिक प्रचलित माध्यम है। यह जानकारी क्षेत्रीय भाषाओं में दी जा सकती है। टेलीविजन भी ऐसा अन्य लोकप्रिय माध्यम है जिसका प्रभावशाली ढंग से इस्तेमाल किया जा सकता है। टेलीविजन आम आदमी द्वारा पसंद किया जाता है क्योंकि, यह मनोरंजन व ज्ञान प्राप्ति का सर्वाधिक सुविधाजनक व आसान तरीका है। ऐसी जानकारी देने के लिए टेलीविजन पर लोकप्रिय कार्यक्रमों के बीच में सूचना या छोटी छोटी दिलचस्प कहानियों के रूप में छोटी छोटी फिल्में बनाई जा सकती हैं। लेकिन जागरूकता लाने के ये तरीके राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर के आयोजकों के अधिकार क्षेत्र में आते हैं न कि जिला स्तर पर व्यावसायिक निर्देशन काउंसलरों के।

पर्दे पर दिखाए जाने वाले संदेशों की जनता आत्मसात कर लेती है और उन विचारों को लम्बे समय तक अपने दिमाग में बैठा लेती है।

वृत्तवर्णन के साथ स्लाइड प्रेक्षाचित्र और छोटी छोटी फिल्में जो गांवों में दिखाई जा सकती हैं, इनके माध्यम से अर्ध-शिक्षित व्यक्तियों के विचारों को प्रभावित किया जाता है। व्यावसायिक निर्देशन काउंसलर को चाहिए कि वह अपने जिले में उन क्षेत्रों की तलाश करें जो मानसिक मन्दन के बारे में संदेश देने के लिए महत्वपूर्ण स्थान सिद्ध हो सकते हैं। व्यावसायिक निर्देशन काउंसलर मानसिक मन्दन के बारे में संदेश के प्रसार के लिए अन्य जागरूकता कार्यक्रमों जैसे परिवार कल्याण कार्यक्रम और बच्चों के टीका करण के लिए जागरूकता कार्यक्रमों से उदाहरण ले सकता है।

किसी व्यावसायिक निर्देशन काउंसलर का कार्य केवल समाज को मानसिक मन्दन की समस्या से अवगत कराना ही नहीं है। यह तो मानसिक रूप से मंद व्यक्तियों की मदद की दिशा में उसके द्वारा उठाया जाने वाला पहला कदम है। समाज के लिए मानसिक मन्दन के प्रति केवल सजग हो जाना ही पर्याप्त नहीं है। अपितु समाज के लिए यह जरूरी है कि वह मानसिक रूप से मंद व्यक्तियों को यथा सम्भव सामान्य बनने में हर सम्भव सहायता करें इसके लिए मानसिक रूप से मंद बच्चों के माता-पिता के समूह बनाकर उन्हें मानसिक रूप से मंद बच्चों के सामान्यीकरण की दिशा में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है। मानसिक रूप से मंद व्यक्तियों का व्यवहार सामान्य बनाने तथा उसे सामान्य बनाए रखने के लिए धीरे धीरे अपेक्षाकृत ऐसी अधिक सामान्य व्यवस्था और प्रक्रिया का इस्तेमाल करना ही सामान्यीकरण है, जो मनोविकास की दृष्टि से यथासम्भव सामान्य स्वरूप हो।

उन्हें यथासम्भव अधिकतम सीमा तक समाज में शारीरिक और सामाजिक रूप से पुनः स्थापित किया जाना चाहिए, बिना इस बात की ओर ध्यान दिए कि वे किस सीमा तक मानसिक रूप से मंद हैं। पिछले तीन दशकों से, मानसिक रूप से मंद व्यक्तियों के कल्याण के लिए माता पिता व उनमें रूचि लेने वाले अन्य व्यक्तियों द्वारा कई संस्थाएं बनाई गईं। भारत में उन्नीसवीं शताब्दी के सातवें व आठवें दशक में सभी बड़े शहरों में माता-पिता की संगठित संस्थाएं बनाई गई हैं। ऐसी संस्थाएँ राष्ट्रीय स्तर पर भी हैं। व्यावसायिक निर्देशन काउंसलर को चाहिए कि वह हर क्षेत्र में माता-पिता के छोटे छोटे समूह बनाने में और मानसिक रूप से मंद व्यक्तियों की बेहतरी के लिए काम करने में उनकी मदद करे। दूसरी ओर ये समूह राष्ट्रीय स्तर पर बड़ी संस्थाओं के सदस्य बन सकते हैं। अतः यह आवश्यक है कि काउंसलर

माता-पिता के साथ मिलकर कार्य करे और मानसिक रूप से मंद बच्चों के माता-पिता द्वारा मिलकर बनाई गई संस्थाएं बड़े समूह समुदाय के साथ मिलकर कार्य करें ।

चूँकि माता-पिता का व्यवहार समाज-समूह से प्रभावित होता है, अतः व्यावसायिक निर्देशन काउंसलर को चाहिए कि वह उन समूहों के दृष्टिकोण को बढ़ावा दें जो इलाज करने के उद्देश्य से संगठित अथवा निर्देशित किए गए हों या बनाए गए हों । ऐसे माता पिता के समूह का हिस्सा होने की भावना जिनकी समस्याएं मिलती जुलती हैं और जो इनका निपटारा अपने ही संस्थानों और स्थानों से कर लेते हैं । इलाज की दृष्टि में रखना काफी महत्वपूर्ण है ।

माता-पिता को न केवल अध्ययन तकनीकों में प्रशिक्षित किया जा सकता है अपितु उन्हें अपने बच्चों की समस्याओं को सुलझाने और उनका सामना करने के कौशल में भी, प्रशिक्षित किया जा सकता है। अतः सामूहिक निर्देशन मानसिक रूप से मंद व्यक्तियों को समाज में पुनः स्थापित करने का एक साधन बन जाता है ।

व्यावसायिक निर्देशन काउंसलर ऐसे ग्रामीण क्षेत्रों में "सेवा केन्द्र" विकसित करने में भी मदद कर सकता है जहां पर अशिक्षित और श्रमिक वर्ग में आने वाले माता-पिता निर्देशन प्राप्त कर सकते हैं। निर्देशन काउंसलर को चाहिए कि वह ग्रामीण समाज में उपलब्ध संस्थानों का उपयोग करे । सेवा केन्द्रों का मुख्य उद्देश्य है समाज में सक्षम व्यक्तियों की खोज करना और उसके बाद उन्हें मानसिक रूप से मंद व्यक्तियों के प्रबंधन में प्रशिक्षित करना । व्यावसायिक निर्देशन काउंसलर यथावश्यकता सेवाओं में वृद्धि करने के लिए आस-पास के शहरों से चल-सेवाओं की व्यवस्था कर सकता है। अतः समाज को, मानसिक रूप से मंद व्यक्तियों की समस्याओं के प्रति जागरूक बनाने और इन लोगों के सामान्यीकरण के लिए काम करने के लिए यह अनिवार्य है कि व्यावसायिक निर्देशन काउंसलर समर्पित होकर कार्य करे।

### सारांश

1. मानसिक रूप से मंद व्यक्तियों के प्रबंधन में व्यावसायिक निर्देशन काउंसलर की भूमिका बताई गई है।
2. माता-पिता को परामर्श देना मानसिक रूप से मंद व्यक्ति का एक महत्वपूर्ण पहलू है ।
3. काउंसलर को सत्यनिष्ठ आश्वासन देने वाला, बातचीत में प्रभावशाली और भावनात्मक स्तर पर दृढ़ होना चाहिए। काउंसलिंग (परामर्श) हमेशा अनिदेशात्मक होनी चाहिए ।
4. माता-पिता को परामर्श इस क्रम में दिया जाना चाहिए । माता-पिता को मानसिक रूप से मंद बच्चे की दशा की जानकारी देना, मानसिक रूप से विकलांग बच्चे की और माता-पिता का सही दृष्टिकोण विकसित करना, और अपने मानसिक रूप से मंद बच्चे को प्रशिक्षित करने में माता-पिता की भूमिका के बारे में उन्हें जानकारी देना ।
5. मानसिक मंदन के बारे में माता-पिता द्वारा पूछे जाने वाले कुछ प्रश्न और उनके उत्तर दिए गए हैं ।
6. समाज में मानसिक रूप से मंद व्यक्तियों को पहचानने की आवश्यकता और उन्हें यथासम्भव आत्मनिर्भर बनाने के लिए उनकी पर्याप्त देखभाल करने के प्रति जागरूकता पैदा की जानी चाहिए ।
7. मानसिक मंदन के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए समाज तक पहुँचने के सामान्य प्रचलित माध्यम हैं - रेडियो, टेलीविजन, स्लाइड प्रेक्षाचित्र और महत्वपूर्ण स्थलों पर पोस्टर ।
8. मानसिक रूप से मंद व्यक्तियों को मंदन के स्तर की ओर ध्यान दिए बिना उन्हें शारीरिक एवं सामाजिक रूप से समाज में पुनः स्थापित करने का उत्तरदायित्व समाज का ही है ।

## स्वमूल्यांकन - IV

1. एक अच्छे काउंसलर की विशेषताएं हैं :-

क. -----

ख. -----

ग. -----

घ. -----

2. ऐसे चार महत्वपूर्ण संदेश बताएं जो आप ग्रामीण क्षेत्रों में किसी मानसिक रूप से मंद बच्चे के माता-पिता को देंगे:

क. -----

ख. -----

ग. -----

घ. -----

3. नीचे दी गई बातें ध्यानपूर्वक पढ़ें और बताएं कि वे "सही" हैं या "गलत"

क. माता-पिता को ऐसी बड़ी बड़ी आशाएं बंधानी चाहिए कि मानसिक रूप से मंद बच्चे में तेजी से सुधार होगा ।

सही/गलत

ख. माता-पिता की समस्याओं को समझने में अत्यधिक समय लगाना चाहिए ।

सही/गलत

ग. परामर्श देने का उद्देश्य यह है कि मानसिक रूप से मंद बच्चे को दुर्व्यवहार से बचाया जाए ।

सही/गलत

घ. गांवों में माता-पिता की सस्थाएं बनाने से माता-पिता मानसिक मंदन की समस्या को बेहतर समझ सकते हैं ।

सही/गलत

4. आपके क्षेत्र में लोगों में मानसिक मंदन के बारे में फैली चार सामान्य भ्रांतियों का उल्लेख करें ।

क. -----

ख. -----

ग. -----

घ. -----



5. ऐसे कौन से चार सामान्य तरीके हैं जो आप अपने क्षेत्र में मानसिक मंदन के प्रति जागरूकता पैदा करने के लिए अपनाएंगे :

क. -----

ख. -----

ग. -----

घ. -----

6. सरकार द्वारा आपके राज्य में मानसिक रूप से मंद व्यक्तियों के लिए दिए गए सामाजिक लाभ बताएं :

— 0 —

## पांचवा अध्याय-5

व्यावसायिक प्रशिक्षण और नौकरी दिलाना

उद्देश्य :

यह अध्याय पूरा कर लेने पर निर्देशन काउंसलर निम्नलिखित कार्य कर सकेगा :-

1. व्यावसायिक प्रशिक्षण के लिए मानसिक रूप से मंद बच्चे का निर्धारण करना ।
2. ऐसे विभिन्न व्यवसायो का पता लगाना जिनमे मानसिक रूप से मंद व्यक्ति को लगाया जा सके ।

## पांचवा अध्याय - 5

### व्यावसायिक प्रशिक्षण और नौकरी दिलाना

मानसिक रूप से मंद व्यक्तियों को शिक्षण और प्रशिक्षण देने का अंतिम लक्ष्य वयस्क जीवन में उनका सामाजिक एवं व्यावसायिक समायोजन करना है। उपयुक्त व्यावसायिक प्रशिक्षण और नौकरी दिलाने के लिए एक अच्छे और प्रभावशाली निर्देशन कार्यक्रम का होना अनिवार्य है। ऐसे निर्देशन कार्यक्रम में केवल मानसिक रूप से मंद व्यक्ति की खूबियों और कमियों को ध्यान में नहीं लिया जाना चाहिए बल्कि, पूरे परिवार और समाज में उपलब्ध संसाधनों पर विचार किया जाना चाहिए।

किसी मानसिक रूप से मंद व्यक्ति को किसी नौकरी में लगाने से पहले काम के प्रति उसकी तत्परता पर विचार कर लेना चाहिए। उसकी तत्परता के निर्धारण के लिए एक सरल जाँच-सूची बना लेनी चाहिए जिसमें ये सब भी शामिल हों-रोजमर्रा के लिए जरूरी कौशल में आत्मनिर्भरता, सामाजिक कौशल, दूसरों का ध्यान रखने की भावना, विश्वसनीयता, वरिष्ठ अधिकारियों/प्राधिकरण के प्रति प्रतिक्रिया प्रक्रियात्मक शैक्षणिक कौशल, समय एवं धन की व्यवस्था करने का सामर्थ्य, कार्यक्षमता, व्यवहार एवं स्वास्थ्य। ऐसी जांचसूची का नमूना जो राष्ट्रीय मानसिक विकलांग संस्थान के क्षेत्रीय परीक्षण के अधीन है इस अध्याय के अंत में दी गई है। मानसिक रूप से मंद व्यक्तियों में तर्क करने और निर्णय लेने में कुछ मूलभूत अयोग्यताएं होती हैं और अमूर्त तत्वों को समझ पाना उनके लिए कठिन होता है। व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन के समय ये बातें ध्यान में रखी जानी चाहिए।

ये नौकरियां समाज में उपलब्ध संसाधनों और मानसिक रूप से मंद व्यक्ति की क्षमता के अनुसार भिन्न प्रकार की होती हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में मानसिक रूप से मंद व्यक्तियों को खेतीबड़ी, मधुमक्खी पालन, मुर्गीपालन, दुग्धशाला और सरल काम वाली नौकरियों में लगाया जा सकता है। शहरी और औद्योगिक क्षेत्रों में मानसिक रूप से मंद व्यक्तियों के लिए कारखाने में कुछ सरल कार्य जैसे संदेशवाहक, लिफ्ट मैन, दुकानों में हैल्पर, और अन्य कुशल एवं अकुशल कार्य उपयुक्त होंगे।

व्यावसायिकों को समाज में सभी उपयुक्त नियोजन सम्भावनाओं की जानकारी रहनी चाहिए। उन्हें चाहिए कि वे गांव के मुखिया और ऐसे अन्य महत्वपूर्ण व्यक्तियों से सम्पर्क बनाए रखें जो मानसिक रूप से मंद व्यक्तियों को नौकरी दिलाने में उनकी सहायता कर सकते हैं। उन्हें चाहिए कि, वे मानसिक रूप से मंद व्यक्ति और उसके परिवार की निम्नलिखित कार्यों में सहायता करें :- क) नियोजन का क्षेत्र चुनना, ख) विशिष्ट नौकरी ढूँढना, ग) अव्यस्क को नौकरी पर लगाए जाने पर कानूनी अपेक्षाएं पूरी करना, घ) नियोक्ता को मानसिक रूप से मंद व्यक्ति के बारे में जानकारी देना। ड.) नियोजन के सामने आने वाली समस्याएं सुलझाने में मानसिक रूप से मंद व्यक्ति, उसके परिवार और नियोक्ता की मदद करना।

नौकरी दिलाने का कार्य संतोष जनक ढंग से कर पाना तभी सम्भव है जब कार्य की अपेक्षाएं कार्य

करने वाले मानसिक रूप से मंद व्यक्ति की क्षमताओं के अनुरूप हों। इन दोनों बातों की जानकारी रखने और नौकरी दिलाने के लिए आयोजन करने में व्यवसायी की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका होती है। व्यावसायिक निर्देशन काउंसलर को चाहिए कि, वह मानसिक रूप से मंद व्यक्ति को किसी कार्य पर लगाने से पहले उस कार्य का और उस कार्य के लिए मानसिक रूप से मंद व्यक्ति की योग्यता होने का पूरी तरह विश्लेषण करे।

उदाहरणार्थ, एसेम्बल करने के काम के लिए निर्देशों का अनुपालन करने और मॉडल की बिल्कुल सही सही नकल करने की क्षमता होनी चाहिए। इसके लिए नियंत्रण स्थिरता की आवश्यकता होती है। दूसरी ओर सदेशवाहक का काम करने के लिए लिखित या मौखिक अनुदेशों को समझने और उनका अनुपालन करने की पर्याप्त क्षमता अपेक्षित है। छोटी-छोटी चीजों को मोड़ने और पैक करने के लिए सूक्ष्म प्रेरक कौशल और सफाई और सूक्ष्मता की आवश्यकता होती है। अतः हर कार्य के लिए कार्य के अनुसार विशिष्ट कौशल अपेक्षित होता है और इसीलिए पहले मानसिक रूप से मंद व्यक्ति की क्षमताओं का निर्धारण कर लिया जाना चाहिए और उसके बाद ही उन्हें काम पर लगाया जाना चाहिए।

किसी मानसिक रूप से मंद व्यक्ति को काम पर लगाए जाने के बाद नियमित रूप से अनुवर्तन करना अत्यंत आवश्यक है। कई मानसिक रूप से मंद व्यक्ति जो कार्य करने में बहुत अच्छे पाए जाते हैं, वे सामाजिक क्षमता के अभाव के कारण अपनी नौकरी जारी नहीं रख पाते। सह-कर्मियों के साथ होना, अनियमितता और अन अनुकूल व्यवहार नौकरी छूटने के कुछ कारण हैं। अनुवर्तन से मानसिक रूप से मंद व्यक्तियों के नौकरी में सफल या असफल होने के कई कारणों का निश्चित संकेत (प्रमाण) मिल जाए।

कुछ कारण जो मानसिक रूप से मंद व्यक्ति के लिए नौकरी के दौरान सफलता में सहायक होते हैं, वे हैं अभिरूचि, शारीरिक क्षमता, भावनात्मक परिपक्वता और सामाजिक क्षमता। मानसिक रूप से मंद व्यक्ति ऐसे कार्यों में अपेक्षाकृत अधिक सफल होते हैं जिसमें सरल कार्यों को दोहराया जाता है बजाय उन कार्यों के जिनमें उन्हें निर्णय लेने पड़ते हैं या अपने कार्य बार-बार बदलने पड़ते हैं। घर की अच्छी स्थितियाँ भी संतोषजनक कार्य समायोजन में सहायक होती हैं। नियोक्ता को मानसिक रूप से मंद व्यक्ति की क्षमता का विश्वास दिलाना और बार-बार अनुदेश देकर उसे प्रशिक्षण देने की प्रक्रिया और प्रबलीकरण से भी मानसिक रूप से मंद व्यक्ति सफलतापूर्वक नौकरी कर सकते हैं।

सम्भव व्यवस्थाएँ जिनमें मानसिक रूप से मंद व्यक्ति कार्य कर सकते हैं वे तीन हैं, अर्थात् स्व रोजगार, अश्रित रोजगार और खुला रोजगार। कोई मानसिक रूप से मंद व्यक्ति किस व्यवस्था के लिए योग्य है यह उसकी मंदन की सीमा, अभिरूचि और घर पर तथा उस समाज में जहाँ वह रहता है, उपलब्ध संसाधनों पर निर्भर करता है। व्यावसायिक निर्देशन काउंसलर को चाहिए कि वह मानसिक रूप से मंद व्यक्ति को किसी कार्य पर लगवाने से पहले इन सभी पहलुओं पर विचार कर ले। इन विभिन्न व्यवस्थाओं के ब्यौरे इस प्रकार हैं :-

## स्व रोजगार :-

कई स्वयंसेवी संगठनों का यह अनुभव है कि ऐसे मानसिक रूप से मंद व्यक्ति जिनके माता-पिता/अभिरक्षक अभिप्रेरित हों, उन्हें स्वनियोजित किया जा सकता है और वे धन अर्जित कर सकते हैं। ऐसी परिस्थितियों में, उनके द्वारा किए जाने के लिए ऐसे कार्य खोजे जाते हैं जिनमें उनके द्वारा तैयार किए गए उत्पादन आस-पास के क्षेत्रों में ही बेचे जा सकें। उदाहरणार्थ, मानसिक रूप से मंद प्रौढ़ व्यक्तियों द्वारा बनाए गए छोटे छोटे लिफाफे पडोस में स्थित नर्सिंग होम को सीधे बेचे जा सकते हैं ताकि, रोगियों को गोलियां डालकर देने के लिए उनका इस्तेमाल किया जा सके। इसी तरह इन लोगों द्वारा घर पर बनाई गई अगरबत्ती भी आस-पास के क्षेत्रों में बेची जा सकती है।

## आश्रयी कार्यशाला :-

इस व्यवस्था में ऐसे अपेक्षाकृत अधिक संरचित कार्य दिए जाते हैं जिनमें समुच्चय बनाने पुर्जे अलग अलग करने, इंजीनियरो के छोटे मोटे कार्यों, पैकिंग आदि के कौशल सिखाए जाते हैं। इसके लिए उन्हें प्रशिक्षण देने हेतु ऐसी कार्यशाला की जरूरत होती है जिसमें अर्हता प्राप्त स्टाफ हो। इसके लिए एक विशिष्ट अवधि के व्यावसायिक प्रशिक्षण और अर्जन केन्द्र (वर्क-स्टेशन) प्रशिक्षण और अंतः कार्य प्रशिक्षण की आवश्यकता होगी। यहां पर ऐसी विभिन्न कम्पनियों के लिए उत्पादन ठेके पर तैयार किए जाते हैं, जिनसे कच्चा माल लिया जाता है और तैयार माल उन्हें लौटा दिया जाता है। मानसिक रूप से मंद प्रौढ़ व्यक्तियों को उनके द्वारा किए गए श्रम के बदले में भुगतान किया जाता है। यहां पर उनसे यह अपेक्षा की जाती है कि, वे अनुशासनबद्ध और नियमित रहें।

## खुला रोजगार :-

मानसिक रूप से मंद व्यक्तियों को किसी सामान्य व्यक्ति की तरह ही काम पर लगाया जाता है और उसी तरह वेतन दिया जाता है। इनमें शामिल कार्य हैं बाल कर्मचारी, लिफ्ट चालक, रेस्तरां में मेज साफ करने वाले, घर की नौकरानियां, माली आदि किसी ग्रामीण क्षेत्र में मानसिक रूप से मंद व्यक्तियों को उनके मानसिक रूप से मंद होने की जानकारी दिए बिना ही अर्ध कुशल और अकुशल कार्यों में लगा दिया जाता है।

राष्ट्रीय रोजगार सेवाएं, राष्ट्रीय व्यवसाय वर्गीकरण (एन.सी.आई 1968) श्रमिक नियोजन एवं पुनर्वास, भारत सरकार से प्राप्त मानसिक रूप से मंद व्यक्तियों के लिए उपयुक्त कार्यों की सूची नीचे दी गई है। यह सूची संक्षिप्त है और इसमें वही कार्य दिए गए हैं जो केवल मानसिक रूप से मंद व्यक्तियों द्वारा ही किए जाएंगे। व्यावसायिक निर्देशन काउंसलर को चाहिए कि, वह व्यक्ति विशेष के अनुसार कार्य का चुनाव करे। इसे वह मानसिक रूप से मंद व्यक्तियों के लिए उपयुक्त कार्य खोजने हेतु स्थानीय संसाधनों का पता लगाने के लिए उपयुक्त कार्यों की सूची नीचे दी गई है। यह सूची संक्षिप्त है और इस में वही कार्य दिए गए हैं जो केवल मानसिक रूप से मंद व्यक्तियों द्वारा ही किए जाएंगे। व्यावसायिक निर्देशन काउंसलर को चाहिए कि वह व्यक्ति विशेष के अनुसार कार्य का चुनाव करे। इसे वह मानसिक रूप से मंद व्यक्तियों के लिए उपयुक्त कार्य खोजने हेतु स्थानीय संसाधनों का पता लगाने के लिए दिशा निर्देश भी मान सकता है।

क्रम सं.	समूह	कार्य का स्वरूप
1.	लिपिकीय एवं संबंधित कर्मी	1. झाड़ पोंछ करने वाला, कार्यालय फ़राश (कार्यालय में अकुशल कार्य करता है जैसे कमरे और फर्नीचर की झाड़पोंछ करना, कार्यालय को खोलना और बंद करने आदि) 2. लिफ्ट-चालक ।
2.	दुग्धशाला कर्मी	1. दुग्धशाला का रखवाला (पशुओं को खिलाना-पिलाना और बल्टियां एवं अन्य बर्तन जीवाणुरहित बनाना)
3.	सेल्समैन, दुकान में मदद करने वाला और संबंधित कर्मी	1. बैकरूम अटेंडेंट
4.	हाउस कीपर, मैट्रन और स्ट्यूअर्ड	1. लिनन कीपर 2. किचन पोर्टर 3. रसोई के काम में मदद करवाने वाले ।
5.	बटलर्स, वियर्स और वेटर्स	1. बियरर, वैटर (घरेलू)
6.	आया दाई	1. आया, दाई (घरेलू)
7.	हेयर ड्रेसर, नाई	1. सैलून बॉय
8.	सर्वीस वर्कर्स	1. कैडी (गोल्फ कोर्ट) (गोल्फ खेलने वालों का नौकर)
9.	फार्म पर काम करने वाले पशु, पक्षी और कीट पालन	1. पशुपालक 2. चरवाहा 3. हाथ से दूध दोहने वाला 4. दूध की मशीन का प्रचलिक 5. दुग्धशाला फार्म पर काम करने वाले जो फार्म के पशुओं आदि के दूध दोहने, सफाई करने, खाना खिलाने का काम करते हैं ।
10.	फार्म के अन्य कार्य	1. घास काटने वाला
11.	जंगल के उत्पादों को कटाई करने वाला और कटाहुआ सामान इकट्ठा करने वाले	1. इंधन के लिए लकड़ी इकट्ठी करने वाला 2. सरकड़े काटने वाला 3. खर-पतवाल काटने वाला

12. आरा चलाने वाला, प्लाईवुड बनाने वाले और इससे संबंधित लकड़ी तैयार करने वाले कर्मी
13. फाइबर तैयार करने वाला
14. क्रशर एंड प्रैसर (तिलहन) ऑयलसीड्स
15. खाण्डसारी, चीनी और गुड बनाने वाले
16. बेकर्स, कन्फेक्शनर्स, मिठाई बनाने वाले और अन्य खाद्य सामान तैयार करने वाले
17. तम्बाकू तैयार करने वाले
18. दर्जी और कढ़ाई करने वाले
19. शू-कटर और संबंद कर्मी
20. बढ़ई, केबिनेट बनाने वाला और सम्बद्ध कर्मी
21. धातु पालिश करने वाले और औजार की धार तेज करने वाले
1. कर्मी (कम कौशल वाले कार्य करना जैसे लकड़ी को पकड़ कर रखना, कटर में बोर्ड काटने के लिए डालना और प्लैक्स डालना)
2. आरा चलाने वाले की मदद करने वाला
1. मिक्सिंग अटैण्डेंट
2. कतरन उठाने वाला
3. उन उठाने वाला
1. ऑयल क्रशर (कोल्ड) ऑपरेटर (पशुओं द्वारा चलाए जाने वाले)
2. खाद्य प्रेस ऑपरेटर
1. कच्चा जूस टैंक पम्प अटैण्डेंट
2. खाद्य संरक्षक ग्रेडर वॉशर
1. हैल्पर दूध केकमेंट का अटैण्डेंट
1. तम्बाकू छोलने वाला
2. बीड़ी बनाना
1. बटन कॉज बनाने वाले
2. डोरी आदि बांधने के लिए छेद बनाना
3. दर्जी की सहायता करने वाला
1. कटर (हाथ से काटने वाला)
2. सोल प्रेसर
3. स्टेप्लिंग मशीन ऑपरेटर (फुटवियर)
1. फ्रेट सा मशीन ऑपरेटर
2. जिग सा मशीन ऑपरेटर
3. पिक्चर फ्रेम मेकर ऑपरेटर
4. लकड़ी वार्निश करने वाला ।
1. पालिश करने वाले

- |     |   |   |
|-----|---|---|
| 22. | मशीनरी फिट करने वाले और मशीन समायोजक          | <ol style="list-style-type: none"> <li>1. समायोजक, कारखाना में काम की निरन्तरता बनाए रखने के लिए समायोजन कार्य</li> <li>2. समायोजक-बाइसाइकिल प्लास्टिक का सामान बनाने के कार्य</li> </ol>   |
| 23. | प्लास्टिक का सामान बनाने वाला                 | <ol style="list-style-type: none"> <li>1. प्लास्टिक या प्लास्टिक सिक्त की शीटों को व्यवस्थित रखना और लाना ले जाना</li> <li>2. गढे हुए प्लास्टिक के सामान की सफाई और फिनिशिंग</li> <li>3. लेमिनेटिंग प्रेस हैल्पर</li> <li>4. प्लास्टिक शीट फिनिशिंग प्रेस ऑपरेटर</li> </ol> |
| 24. | किताबों पर जिल्द चढ़ाने वाले और सम्बद्ध कर्मी | <ol style="list-style-type: none"> <li>1. जिल्द चढ़ाना</li> <li>2. विशिष्ट साइज (आकार) का कागज काटना</li> <li>3. खाली शीट्स पर लाइनें खींचना</li> <li>4. गोद लगाना</li> </ol>   |
| 25. | पेंटर्स, स्प्रे और साइन राइटिंग (स्टेंसिल)    | <ol style="list-style-type: none"> <li>1. पेन्टर-स्प्रे</li> <li>2. पेन्टर-ब्रश</li> <li>3. पेन्टर-वुडवर्क और फर्नीचर</li> </ol>  |
| 26. | टोकरीया बुनने वाले और ब्रश बनाने वाले         | <ol style="list-style-type: none"> <li>1. केनर</li> <li>2. टोकरी बनाने वाला</li> <li>3. चटाई बुनने वाला, बाँस</li> <li>4. झाड़ू बनाने वाला</li> </ol>   |
| 27. | निर्माण कर्मी                                 | <ol style="list-style-type: none"> <li>1. डिस्टेम्पर करने वाला</li> <li>2. सफेदी करने वाला</li> </ol>   |
| 28. | ऑयलर्स एण्ड ग्रीसर्स और क्लीनर्स              | <ol style="list-style-type: none"> <li>1. क्लीनर्स मोटर वाहन</li> <li>2. ग्रीसर</li> </ol>  |

मानसिक रूप से मंद व्यक्तियों के लिए उपयुक्त ऊपर बताई गई विभिन्न नौकरियां हर जगह उपलब्ध नहीं हो सकती । जैसा कि, पहले बताया गया है, व्यावसायिक निर्देशन काउंसलर को चाहिए कि, वह उस क्षेत्र का अध्ययन करे जहां मानसिक रूप से मंद व्यक्ति रहता है और वहीं पर उपयुक्त नौकरी की तलाश करे ।



मानसिक रूप से मंद व्यक्तियों का व्यवसाय-पूर्व स्तर निर्धारण करने के लिए एक जांच सूची नीचे दी गई है । किसी मानसिक रूप से मंद व्यक्ति पर नौकरी के लिए विचार किए जाने से पहले यह जरूरी है कि वह किसी स्व रोजगार, अश्रियो रोजगार या खुले रोजगार में स्वतंत्र रूप से कार्य करता हो । जांचसूची में मोटे तौर पर कार्य के क्षेत्र और प्रत्येक क्षेत्र के अंतर्गत आने वाली मद दी गई हैं ।

## व्यवसायपूर्व स्तर के लिए जांचसूची

### उपयोग के लिए अनुदेश

किसी कौशल विशेष रूप में मानसिक रूप से मंद व्यक्ति की कार्य-क्षमता के स्तर का निर्धारण करने के लिए, विभिन्न कौशलों के अंतर्गत दिये गये प्रत्येक मद को ध्यानपूर्वक पढ़ें और आई, सी, वी पी, पी पी, टी डी अथवा पी आई में से ऐसा कोड चुनें जो कार्य क्षमता के मौजूदा स्तर का सर्वोत्तम ढंग से वर्णन करता है ।

कोड संबंधी ब्योरा इस प्रकार है ।

आई - आत्मनिर्भर

सी - सकेत देना पडता है ।

वी पी - मौखिक रूप से प्रोत्साहित करना पडता है ।

पी पी - शारीरिक तौर पर प्रोत्साहित करना पडता है ।

टी डी - पूर्ण रूप से निर्भर

पी आई - शारीरिक दृष्टि से अक्षम

अपनी जांचसूची में उपयुक्त स्थान पर अपना जवाब रिकार्ड करें अर्थात् किसी विशिष्ट कौशल के लिए 'आई' का चिन्ह लगाया जाना ही उस विशिष्ट कौशल के लिए उपयुक्त (पास/उत्तीर्ण) माने जाने का मानदण्ड होगा । "सी" प्राप्त करने पर किसी विशिष्ट कौशल के लिए उपयुक्त माना जाएगा लेकिन इस कौशल की सुदृढ़ बनाए जाने की आवश्यकता है । सभी कौशलों में 80% प्राप्त करना व्यवसाय-पूर्व स्तर के लिए उपयुक्त माना जाएगा जो किसी मानसिक रूप से मंद व्यक्ति को व्यावसायिक प्रशिक्षण के लिए योग्य माना जाएगा ।

जिस व्यक्ति को प्रेरण समस्याए होंगी, वह प्रेरण क्षेत्र में 80% कौशल प्राप्त नहीं कर पाए । इसी तरह जो व्यक्ति बोल नहीं सकता, वह वाक्यों में ठीक से सम्प्रेषण कर लेते हैं, या "दो या तीन व्यक्तियों के साथ सार्थक बातचीत कर लेता है । मदों में अंक प्राप्त नहीं कर पाएगा लेकिन हो सकता है कि, वह इशारों से अपनी बात समझ पाए । ऐसे चलने-फिरने या बोलने में असमर्थ व्यक्तियों का मूल्यांकन तदनुसार किया जाना चाहिए । इसी तरह शैक्षणिक कौशल के लिए मध्यम/गम्भीर रूप से मंद व्यक्ति के लिए छूट दी जा सकती है ।

मुद्रण के समय, यह जांचसूची रा.मा.वि.सं. के क्षेत्र परीक्षणाधीन थी । क्षेत्र परीक्षण के परिणामों के आधार पर कुछ मदों में सुधार किया जा सकता है या उन्हें हटाया जा सकता है । कुछ मदों को और अधिक संशोधित किए जाने की जरूरत है । इस जांचसूची का आशय व्यवसायपूर्व स्तर पर किसी मानसिक रूप से मंद व्यक्ति का निर्धारण करने के लिए व्यावसायिक काउंसलर का मार्गदर्शन करना है । क्षेत्र परीक्षण के विस्तृत ब्योरे के लिए सुश्री श्रेसिया कुट्टी और डा. जयन्ती नारायण, रा.मा.वि.सं. से संपर्क करें ।

**राष्ट्रीय मानसिक विकलांग संस्थान**  
**व्यवसायपूर्व स्तर के लिए जांचसूची**

	प्रवेश स्तर	नर्माण स्तर				आकलन स्तर	अभ्युक्तिया
		1	2	3	4		
तारीख							
क. गामक कौशल							
1. उछल सकता है ।							
2. कूद सकता है ।							
3. मैदान में खेले जाने वाले खेल (जैसे फुटबाल)							
4. भागना, कूदना, फेंकना, आदि जैसे खेलों में भाग लेता है ।							
5. घर के अंदर खेले जाने वाले खेल खेलता हैं (जैसे कैरम)							
6. छोटी छोटी चलती हुई चीजें पकड़/उठा लेता है ।							
7. बटन टाक लेता है ।							
8. किसी भी रेखा-चित्र की नकल उतार लेता है							
9. किसी दी गई सतह को रंगमाल से पालिश कर लेता है							
10. साइकिल चला ले लेता है ।							
ख. आत्मनिर्भरता कौशल							
1. शौचादि की आवश्यकता का पूर्वानुमान लगा लेता है और शौचालय का उपयोग ठीक से कर लेता है।							
2. मदद के बिना सफाई रख लेता है (ब्रुश, करना, नहाना, कंधी करना)							

	प्रवेश स्तर	नर्माण स्तर				आकलन स्तर	अभ्युक्तिया
		1	2	3	4		
तारीख							
<p>3. मासिक धर्म की सफाई/शेवबनाना</p> <p>4. ठीक से खाना खा लेता है । परिवार के बीच देखरेख के बिना उचित बर्ताव करता है ।</p> <p>5. रेस्तरा में जाकर खाने का आर्डर दे सकता है और खाना खा सकता है ।</p> <p>6. मदद के बिना कपड़े पहन लेता है और साफ सुथरा रहता है ।</p> <p>7. किसी दुकान से कपड़े पसंद करलेता है।</p> <p>8. कहीं कट जाने पर डिटोल लगा लेता है और पट्टी बांध लेता है ।</p> <p>9. समय सारणी के अनुसार दवा ले लेता है ।</p> <p>ग. सम्प्रेषण कौशल</p> <p>1. इशारों के साथ साथ मौखिक सम्प्रेषण</p> <p>2. केवल शब्दों का प्रयोग करते हुए सम्प्रेषण करता है ।</p> <p>3. अपनी बात इशारों से/कह कर दूसरों से समझ लेता है ।</p> <p>4. पूरे वाक्य बोलकर ठीक से बातचीत कर लेता है ।</p> <p>5. जो बात उससे कही जाती है उसे वह सुनता है और ठीक से समझ लेता है ।</p> <p>6. 2 या 3 व्यक्तियों से सार्थक बातचीत कर लेता है ।</p> <p>घ. सामाजिक कौशल</p> <p>1. अपने साथियों और बड़ों का अभिवादन ठीक से करता है ।</p> <p>2. आवश्यकता पडने पर बिना प्रोत्साहित किए मदद करने के लिए तैयार हो जाता है ।</p>							

	प्रवेश स्तर	नर्माण स्तर				आकलन स्तर	अभ्युक्तिया
		1	2	3	4		
तारीख							
<p>3. समूह के बीच होने पर सहायोग देता है।</p> <p>4. आगुतकों का स्वागत करता है और उन के साथ उचित व्यवहार करता है ।</p> <p>5. अपनी सम्पत्ति को पहचानता है और उसकी रक्षा करता है ।</p> <p>6. दूसरों की सम्पत्ति (चीजों) का इस्तेमाल करने से पहले उनसे पूछ लेता है ।</p> <p>7. किसी दी हुई स्थिति में उचित व्यवहार करता है।</p> <p>8. सरल कार्यों में साथियों का नेतृत्व कर लेता है ।</p> <p>9. समुदाय में विभिन्न स्थानों की पहचान रखता है (शौचघर, थियेटर, अस्पताल, डाकघर, बैंक)</p> <p>10. अपने विरुद्ध लिंग के व्यक्ति के साथ उचित व्यवहार करता है ।</p> <p>11. मताधिकार की जानकारी रखता है ।</p> <p>12. देश और शहर का नाम बता सकता है।</p> <p>ड. शैक्षणिक कौशल</p> <p>1. 10 महत्वपूर्ण चिह्न समझता है और पहचान लेता है। (जहर, पुरुष, महिला, गरम, ठण्डा, रूको, खतरा, शौचालय, अन्दर, बाहर)</p> <p>2. सरल वाक्य पढ़ और समझ लेता है ।</p> <p>3. सरल वाक्य लिफाफे लेता है ।</p> <p>4. पत्र और पत्र के लिफाफे पर घटा लिख लेता है।</p> <p>5. 100 तक की गिनती समझता है ।</p> <p>6. एकल अंकों का जोड़ कर लेता है ।</p> <p>7. दो अंको के हासिल वाले जोड़ कर लेता है।</p> <p>8. एक अंको को घटा लेता है ।</p>							

	प्रवेश स्तर	नर्माण स्तर				आकलन स्तर	अभ्युक्तिया
		1	2	3	4		
तारीख							
9. दो अंकों के हासिल वाले अंकों को घटा कर सवाल कर लेता है (20 तक) ।							
10. सरल गुण कर लेता है ।							
11. सरल भाग, कर लेता है ।							
12. मापने वाली टेप का प्रयोग कर लेता है।							
13. तराजू का प्रयोग करते हुए 100 ग्राम तक की वस्तुएं तोल लेता है ।							
14. मापक कर्पों का प्रयोग करते हुए तरल पदार्थों का वितरण कर लेता है ।							
15. 5 रूपए तक का सामान खरीद सकता है और बाकी पैसे वापस ले लेता है ।							
16. घड़ी देखकर घंटे, 30 मिनट, 15 मिनट और 45 मिनट बता सकता है ।							
17. घड़ी देखकर ठीक-ठीक मिनट तक समय बता सकता है ।							
18. समय और काम के बीच सम्बन्ध स्थापित कर सकता है ।							
19. इस बात की समझ रखता है कि, काम करने पर ही पारिश्रमिक दिया जाता है ।							
20. सामान्य बैंक खाता संचालित कर लेता है।							
च. व्यावसायिक कौशल							
1. आस-पास के परिवेश में नौजूद जोखिमों के प्रति सजग रहता है । (स्लेड, हथौड़ी, आरा, छेनी, बरछी, नंगी तारों अदि से काम करते समय सावधान रहता है)							
2. बिजली के घरेलू सामान का प्रयोग सावधानी से करता है । (प्रेस, टेबल लाईट, वाटर हीटर)							

	प्रवेश स्तर	नर्माण स्तर				आकलन स्तर	अभ्युक्तिया
		1	2	3	4		
तारीख							
3. किसी की देखरेख के बिना फर्श पर पोछा लगा लेता है ।							
4. फर्नीचर की झाड़-पोछ सफाई से कर लेता है।							
5. कपडे धो और सुखा लेता है ।							
6. कपडे प्रेस कर लेता है ।							
7. साधारण खाना बना लेता है और परोस लेता देता है ।							
8. यदि सूची बना कर दे दी जाए तो खाना बनाने का जरूरी सामान खरीद लेता है।							
9. दूसरे लोगों को परेशान किए बिना एक घंटे तक सौपा गया कार्य कर सकता है।							
10. दैनिक कार्यक्रम की याद दिलाए बिना, बताए गए क्षेत्र में जा सकता है ।							
11. धन प्राप्त करने के लिए कार्य को समझता और पूरा कर सकता है ।							
12. घर से अपने कार्य-स्थल पर पहुंच सकता है ।							
13. यातायात के बुनियादी नियमों की जानकारी रखता है ।							
14. बस में अपने आप यात्रा कर सकता है ।							
15. आवश्यक ब्यौरे देते हुए आवेदन-पत्र भर सकता है ।							

## व्यवसाय पूर्व स्तर पर निर्धारण

क्रम सं.	क्षेत्र	कौशलों की संख्या	प्राप्त कौशलों की संख्या				आकलन स्तर	अभ्युक्ति या
			प्रवेश स्तर	निर्माण स्तर		4		
		तारीख	1	2	3	4		
1.	गामक कौशल	10						
2.	स्वावलंबन कौशल	9						
3.	सम्प्रेषण कौशल	6						
4.	सामाजिक कौशल	12						
5.	शैक्षणिक कौशल	20						
6.	व्यवसायिक कौशल	15						
	कुल	72						

यह अपेक्षा की जाती है कि मानसिक रूप से मंद व्यक्ति व्यवसाय पूर्व स्तर पर अंतः कार्य प्रशिक्षण के लिए उपर्युक्त कौशलों में से 80% कौशल प्राप्त करें ।

### सारांश :-

1. मानसिक रूप से मंद व्यक्तियों को प्रशिक्षित करने का अंतिम लक्ष्य यह है कि, उन्हें यथासम्भव आत्म निर्भर बनाया जाए और अल्प या साधारण रूप से मानसिक रूप से मंद व्यक्तियों को अपनी जीविका कमाने के योग्य बनाया जाए ।
2. प्रत्येक मानसिक रूप से मंद व्यक्ति को किसी कार्य में प्रशिक्षित करने के लिए उसकी काम करने की तत्परता का निर्धारण किया जाना चाहिए ।
3. मानसिक रूप से मंद व्यक्ति तीन भिन्न व्यवसायों में काम कर सकते हैं - स्वरोजगार, आश्रयी रोजगार और खुला रोजगार ।
4. मानसिक रूप से मंद व्यक्तियों के लिए उपयुक्त कार्यों (नौकरियों) की सूची दी गई है ।
5. मानसिक रूप से मंद व्यक्तियों का व्यवसायपूर्व स्तर पर निर्धारण करने के लिए एक जांच सूची दी गई है ।

## स्व मूल्यांकन-V

1. निम्नलिखित बातों को ध्यान से पढ़ें और बताएं कि ये सही हैं या गलत ।
  - क. सभी मानसिक रूप से मंद व्यक्तियों को नौकरी पर रखा जा सकता है । सही/गलत
  - ख. किसी व्यस्क मानसिक रूप से मंद व्यक्ति को, जिसे दैरे पडते हों, ऐसी नौकरी पर नहीं रखा जाना चाहिए जहां काटने वाले औजारों और मशीनों का काम होता है । सही/गलत
  - ग. मानसिक रूप से मंद व्यक्तियों को ग्रामीण क्षेत्रों में व्यवसाय नहीं दिया जा सकता । सही/गलत
  - घ. मानसिक रूप से मंद व्यक्ति को किसी नौकरी पर रखने से पहले उसे उस प्रकार के कार्य में कुछ समय तक प्रशिक्षित किया जाना चाहिए । सही/गलत
  - ड. व्यावसायिक निर्देशन परामर्शक द्वारा समय समय पर सहायता करना मानसिक रूप से मंद व्यक्ति के लिए नौकरी में व्यवस्थित होने में सहायक होगा । सही/गलत
  - च. मानसिक रूप से मंद व्यक्ति को व्यावसायिक प्रशिक्षण के लिए उपयुक्त समझे जाने से पहले यह आवश्यक है कि, वह अपने निजी कार्यों के लिए आत्मनिर्भर हो । सही/गलत
2. मानसिक रूप से मंद व्यक्ति को व्यावसायिक प्रशिक्षण देने से पहले जिन छः महत्वपूर्ण क्षेत्रों में उनका निर्धारण किया जाना चाहिए, उनके नाम बताइए :
  - क. .... ख. ....
  - ग. .... घ. ....
  - ड. .... च. ....
3. मानसिक रूप से मंद व्यक्तियों को किन तीन व्यवस्थाओं में नौकरी पर रखा जा सकता है ।
  - क. ....
  - ख. ....
  - ग. ....



## उत्तर - कुंजी

### 1. स्व मूल्यंकन - I

1. क. स्पष्ट रूप से औसत से कम सामान्य बौद्धिक क्षमता  
ख. अनुकूली व्यवहार में त्रुटियाँ / दोष  
ग. विकासात्मक अवीध के दौरान अभिव्यक्ति (मैनीफेस्टेशन)
2. 2%
3. क. विधि  
ख. जनसंख्या अध्ययन के प्रकार  
ग. मानसिक मदन की परिभाषा
4. क. (3)  
ख. (1)  
ग. (4)  
घ. (2)
5. निम्नलिखित के जोड़ बनाएं  
क. (2)  
ख. (3)  
ग. (4)  
घ. (1)
6. सही या गलत
  1. सही
  2. गलत
  3. गलत
  4. सही
  5. गलत

## स्व-मूल्यांकन - II

1. ख
2. ख
3. ग
4. क. बच्चों का टीकाकरण  
ख. बच्चों का पर्याप्त पोषण  
ग. बच्चों को तेज बुखार होने पर उसका शीघ्र नियंत्रण  
घ. बच्चों को पडने वाले दौरे का शीघ्र नियंत्रण
5. ग.
6. ग.
7. क. शैशवकाल के शुरू में ही स्वलीनता  
ख. भावात्मक विक्षोभ वाला बच्चा  
ग. विशिष्ट अधिगम असमर्थता  
घ. दृश्य अथवा श्रव्य दोष वाला बच्चा
8. ख

## स्व-मूल्यांकन III

1. क. (2)  
ख. (4)  
ग. (1)  
घ. (3)
2. (क) विकास की अवस्थाओं में विलम्ब  
(ख) दौरे या शारीरिक असमर्थता  
(ग) पढ़ने लिखने में कमजोर

3. क. (3)  
ख. (1)  
ग. (4)  
घ. (2)
4. 3-5-4-2-1
5. शिशु उत्तेजक कार्यक्रम से आरम्भ करें। बच्चे को दृश्य, श्रव्य और उत्तेजक से उत्तेजित करें। बच्चे को गामक कौशलो में प्रशिक्षित करें। यदि और अधिक सलाह की जरूरत हो तो बच्चों को विशेष शिक्षाविद (या जिला पुनः स्थापन केन्द्र में कार्यरत मनोवैज्ञानिक), भौतिक शारीरिक चिकित्सक और वाक् चिकित्सक के पास ले जाने का परामर्श दें।
6. सम्भव है कि यह लड़का मानसिक रूप से मंद न हो। क्योंकि, 9 वर्ष तक तो यह सामान्य ही था। हो सकता है कि पढ़ाई - लिखाई में कमजोर होने का कारण कुछ मनोवैज्ञानिक समस्याएँ हों। अतः उसे विस्तृत जंघ के लिए मनस्चिकित्सक के पास ले जाने का परामर्श दें।
7. बच्चे की कार्यक्षमता के मौजूदा स्तर का निर्धारण करना होगा और उसे रोजमर्रा की जिन्दगी में आवश्यक कौशलों और सम्प्रेषण कौशलों में प्रशिक्षित करने के लिए एक प्रबन्धन (देखभाल) योजना तैयार करनी होगी। बच्चे को नियमित जंघ के लिए डॉक्टर और शारीरिक चिकित्सक के पास भेजते रहना चाहिए।

#### स्व-मूल्यांकन - IV

1. क. सत्यनिष्ठ  
ख. बार-बार आश्वासन देने वाला  
ग. प्रभावकारी सम्प्रेषण  
घ. भावात्मक दृढ़ता
2. क. प्रशिक्षण देने से मानसिक मन्द व्यक्ति में सुधार होगा।  
ख. मानसिक मन्द संक्रामक रोग नहीं है।  
ग. ऐसे कई कारण हैं जिनकी रोकथाम की जा सकती है।  
घ. धीरे-धीरे क्रम से प्रशिक्षण देना ही सफलता की कुंजी है। यदि आपको कम समय में सफलता न मिले तो निराश न हों।

3. क. गलत  
ख. सही  
ग. गलत  
घ. सही
4. अपने क्षेत्र में फैली भ्रान्तियों का पता लगाएं और उन्हें दूर करें ।
5. क. पोस्टर  
ख. छोटी छोटी फिल्में  
ग. स्लाइड शो  
घ. सिनेमा घरों में स्लाइड
6. अपनी राज्य सरकार द्वारा दिए गए लाभ बताएं । रेलवे मानसिक रूप से ~~द~~ व्यक्तियों और उनके साथ रेल से सफर करने वाले व्यक्ति के लिए रियायती टिकट देता है ।

स्व-मूल्यांकन - V

1. क. गलत  
ख. सही  
ग. गलत  
घ. सही  
ड. सही  
च. सही
2. क. मोटर कौशल  
ख. स्व सहायक कौशल  
ग. संप्रेषण  
घ. सामाजिक कौशल  
ड. क्रियात्मक शिक्षण  
च. वोकेशनल स्किल्स
3. क. स्व रोजगार  
ख. परिरक्षित रोजगार  
ग. खुला रोजगार